

संगणकसंस्करणं दासाभासेन हरिपार्षददासेन कृतम्

Digitization, PDF Creation,

Bookmarking and Uploading by:

Hari Pārṣada Dāsa on 03-August-2015.

※ श्रीगदाधरगौराङ्गौ विजयेताम् ※

श्रीगोविन्द-वृन्दावनम्



श्रीवृन्दाबनधाम वास्तव्येन

न्याय-वैशेषिकशास्त्र, न्यायाचार्य, काव्य, व्याकरण, सांख्य, मीमांसा

वेदान्त, तर्क,तर्क,तर्क,वैष्णवदर्शनतीर्थ, विद्यारत्नाद्युपाध्यलङ्कृतेन

श्रीहरिदासशास्त्रिणा सम्पादितम् ।



सद्ग्रन्थ प्रकाशक :—

श्री गदाधरगौरहरि प्रेस

श्रीहरिदास निवास कालीदह वृन्दाबन

※ श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयताम् ※

विज्ञप्तिः—

असीम नील गगन के अप्रकाशित अजस्र नक्षत्र पुञ्जकी ज्योतिः की भाँति सनातन शास्त्र भाण्डार के अनुपम ग्रन्थरत्नों में "श्रीगोविन्द-वृन्दाबन" अत्यद्भुत ग्रन्थ है, गोविन्द एवं वृन्दावन, स्वाभाविक प्रेमास्पद होने के कारण, उक्त शब्दद्वय, मानव मनमें अपूर्वशान्ति धारा प्रवाहित करते रहते हैं, श्रीगोविन्द वृन्दाबन ग्रन्थ में उन दोनों का अनुपम नूतन विवरण अङ्कित है।

प्रथमतः—शिव विरिञ्चि संवाद नामक प्रथम पटल में वृन्दाबन वर्णना, योगपीठ की बर्णना, श्रुतिगणकी प्रार्थना, उपपति भावमें श्रीकृष्ण प्राप्ति के लिए वरदान, श्रीकृष्ण नाम, लीलादिका वर्णन, श्रीकृष्ण के अनेक अश्रुतचर परिकरों के नाम, श्रीकृष्ण बलराम संवाद, एवं श्रीकृष्णकृत अभिनव श्रीराधास्तव वर्णित है।

श्रीश्रीमन्महाप्रभु श्रीगौराङ्ग देव के समय इस ग्रन्थ की प्रामाणिकता अत्यधिक रही। फलतः श्रीराधव पण्डित कृत श्रीकृष्णभक्तिरत्नप्रकाश ग्रन्थमें इस ग्रन्थके अनेक स्थल उद्धृत हुए है, प्रस्तुत ग्रन्थ बृहद् गौतमीय तन्त्रका ही अंशविशेष है।

हरिदासशास्त्री

※ श्रीश्री गौरगदाधरौ जयतः ※

❀ दुरूहाद्भुत वीर्य्यं श्रीहरिनाम। ❀

——:※:——

दुस्तर्क्य, दुर्ज्ञेय आश्चर्य प्रभाव सम्पन्न वस्तु एकमात्र श्रीहरिनाम ही है। प्रभाव सम्पन्न वस्तु को कारण कहा जाता है, कारण वह होता है, जो निखिल कार्योत्पादिका शक्ति सम्पन्न हो। शक्ति भी वह है जो कार्य समूह से मण्डित हो। सर्वत्र सर्वदा सक्रिय अव्यभिचारी वास्तविक सामूहिक--शक्ति सम्पन्न वस्तु को ही एक सत् अद्वितीय परमानन्द रूप से विश्व का कारण कहा गया है। जब कार्य प्रत्यक्ष होता है। किन्तु कारण का निर्वचन करने में मति कुण्ठित हो जाती है, यदि उदाहरण के लिए विश्व को ही लिया जाय तो सुस्पष्ट होगा कि कार्यों के सदा प्रत्यक्ष होने पर भी ठीक कारण का निर्वचन करने में मानव की मति असमर्थ हो जाती है। किन्तु कार्य और कारण अपनी-अपनी कक्षा में सदा व्यवस्थित रूप में अवस्थान करते हैं। कारण एक ही है। किन्तु उसके परिचायक नाम विभिन्न हैं। विभिन्नता में अभिन्नता एवं अभिन्नता में विभिन्नता अद्वितीय वस्तु में दुस्तर्क्य शक्ति का ही परिचायक है। सुस्पष्ट रूप से इस तत्त्व का निर्वचन 'सत्यं परं धीमहि' रूप से श्रीव्यास जी ने ही किया है। आगे भी इस परम सत्यं को परमपुरुष श्रीकृष्ण नाम से उल्लेख किया है। इस परम तत्त्व को जानने के लिए समग्र ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य के साथ परिचय प्राप्त करना भी आवश्यक है। श्रीव्यास जी ने अपूर्व शक्तिमत् तत्त्व का अभिन्न रूप से ही दर्शन किया।

ग्रीष्म के अनन्तर नवीन जलधर जैसे परिवर्षण से आतप-तप्त पृथ्वी को शीतलता प्रदान करता है, वैसे ही अति शुद्ध सत्त्वगुणात्मक तेजोमय एवं ब्रह्मपद वाच्य आकाश स्वरूप श्रीकृष्ण भी त्रिताप-दग्ध जीव को, उनके चरण नख स्पृष्ट अमृत स्वरूप मुक्ति को प्रदान करते

हैं। इसीलिए ही आप नवीन नीरद सदृश हैं। आप श्रीकृष्ण घन-आनन्द कन्द मुरलीधर हैं, आपकी जनहित कर अनन्त लीलाएं हैं, जो मुरली--मनोहर के साथ निरन्तर क्रीड़ा परायण है। वह लीला कुहकिनी श्रीराधा की कौतुक क्रीड़ा है। गोलोक में श्रीकृष्ण सुहागिनी श्रीराधा गोकुल में योगमाया श्रीराधिका कृष्णभाविनी हैं। गोलोक, जीवदेह रूप क्षुद्र ब्रह्माण्ड, गोलोक वृहद् ब्रह्माण्ड, गोलोक महद् ब्रह्माण्ड, ये ब्रह्माण्ड ही श्रीराधाके विभिन्न रूपहैं। जीव देह श्रीराधा जीवात्मा कृष्ण,आत्मा प्रणयिनी श्रीराधा,जीव प्रणयिनीभी श्रीराधिका हैं। श्रीकृष्ण चरण श्रीराधिका सेवित हैं, किन्तु श्रीराधिका चरण भी श्रीकृष्ण वाञ्छित हैं।

कृष्ण प्रेममें राधिका विधुराहै तो श्रीराधा नाम श्रवणसे कृष्ण भी मूर्च्छित हैं। कृष्ण की मुरली ध्वनि से श्रीराधा पागलिनी है, और राधा के अनिमेष नयन में कृष्ण वद्ध हैं। श्रीकृष्ण सम्पद् राधा है, और श्रीकृष्ण प्रेम में उन्मादिनी श्री राधिका हैं। व्रजविहार के समय श्रीराधिका ने कृष्ण को कहा था, की तुम मेरा सर्वस्व धन हो, उत्तरं में तत्काल कृष्ण ने भी कहा तुम तुम कहने में मैं असमर्थ हूँ सर्वस्व धन कहना तो दूसरी वात है।

सूक्ष्म में श्रीराधा और स्थूल में भी श्रीराधिका हैं। श्रीकृष्ण की मुरली ध्वनि से श्रीराधा जीवन प्राप्त होकर नाच नाच कर श्री राधिका रूप ब्रह्माण्ड में परिणत हो गयाहै। राधा को छोड़कर कृष्ण नहीं, कृष्ण के विना राधा नहीं है। राधा कृष्ण हंसः। श्रीकृष्ण राधिका विश्व जगत्।

श्री शक्तिमान् की शक्तिस्फूर्त्ति ही राधाकृष्ण विहार है, वह विहार अहरहः चलता रहता है। उभय के मध्य में चन्दन, अगुरु, कस्तूरी, तिलकादि का भी अन्तर नहीं है। मुरली ध्वनि के साथ राधा चरण नूपुर ध्वनि के समावेश से जो एकता की सिद्धि होती है उस के मध्य में भी श्रीकृष्ण वर्त्तमान हैं। यहाँ पर नाना मुनि नाना मत जल्पना--,कल्पना भी कृष्ण को सुचारु वन्धन से बांध देती है। वह बन्धन भी श्रीराधा की रूप कल्पना को छोड़कर और कुछ भी नहीं है। वह बन्धन वेदान्त की माया, साख्य की प्रकृति, तन्त्र की आद्या शक्ति, श्रीविष्णु पुराण, श्रीब्रह्मवैवर्त्त की राधा, ईश्वर की ऐशी शक्ति हैं। शिव का बन्धन कुण्डलिनी और कृष्ण का बन्धन श्रीराधा, कुण्ड लिनी त्रिवलयाकार के द्वारा शिव को वेष्टन करके अवस्थित है। कृष्ण भी त्रिभङ्ग है, शिव के कुण्डलिनी फणा है और श्रीकृष्ण का शिरोभूषण सो मयूर पुच्छ है। कुण्डलिनी का आधार शिव है, राधा का आधार भी कृष्ण है, कुण्डलिनी राधा व्यक्त हैं, शिव कृष्णअव्यक्त हैं, तर्कराशी से श्रीकृष्ण अनेक दूर में स्थित हैं, कणाद का परमाणु से भी कृष्ण सूक्ष्म है, क्षुद्र से भी क्षुद्र और आप महत् से भी धारणातीत महत् हैं।

मूल तत्त्व कृष्ण हैं, श्रीराधा उनकी प्रकृति हैं। सृष्टि सूचना के पहले कृष्ण अव्यक्त थे, और राधा भी अव्यक्त थीं। सच्चिदानन्द अव्यक्त कृष्ण की मुरली ध्वनि होने से काल शक्ति रूप। राधा त्रिगुण मयी प्रकृति रूप में प्रकाशित होती है, कृष्ण सान्निध्य प्राप्त होकर ही राधा राधा है,कृष्ण सरचर को प्राप्त न होने से राधा भी नाचती नहीं कृष्ण द्रष्टा, राधा दृश्य हैं। स्थूल दृष्टि से वास्तव जगत् में कृष्ण नव परिणीता कुलवधु, सीमन्त दीपिका सिन्दुरसे अलक्तक रञ्जित चरण युगल का शुभ्र नखसौन्दर्य पर्यन्त सव कुछ ही श्रीराधा का रूपान्तर परिणाम कृष्ण के विना राधा मूल्य हीन है।

जव श्रीराधा का आविर्भाव नहीं हुआ था अर्थात् सृष्टिके पहले जो अवस्था थी, प्राचीनगण उसको अव्यक्त नाम से पुकारते हैं, तव कृष्ण के अङ्क में श्रीराधा विलीन थी, द्रष्टा एवं दृश्य कुछ भी नहीं था, इसके वाद अव्यक्त अन्तर्यामी निराकार कृष्ण की अव्यक्त मुरली ध्वनि होने से नित्य परिवर्त्तनशील प्रकृतीश्वरी श्रीराधा का भी विवर्त्तन सुरु हुआ। इस घटना को उपलक्ष्य करके ही वङ्गीय कवि ज्ञान दास ने लिखा है,

अपरूप तुआ, मुरली ध्वनि ।
लालसा बाड़ल शब्द शुनि ।।

मुरली ध्वनि के साथ श्रीराधा की लालसावृद्धि नृत्य का प्रारम्भ ही सृष्टि की सूचना है । मुरली शब्द ब्रह्म है, श्रीराधा ध्वनि शब्द स्पन्दन है, कृष्ण मुरली श्रीराधा ध्वनि, कृष्ण ध्वनि श्रीराधा मूर्च्छना । ध्वनि मूर्च्छना वृद्धि के समान मूल प्रकृतीश्वरी जगत् प्रपञ्च रूप में विस्तीर्ण हो जाती है । गोलोक की रासेश्वरी श्रीराधा गोकुल में गोपनन्दन श्रीकृष्ण की प्रणयिनी हुई । जगत् के सूक्ष्मातिसूक्ष्म से स्थूलतम पदार्थ श्रीराधा की मोहाच्छन्न शक्ति से अभिभूत हैं । रूप सौन्दर्य से हतज्ञान जगत् की प्राण श्रीराधा है किन्तु प्राण का भी प्राण राधावल्लभ श्रीकृष्ण है । सर्वदा ही श्रीकृष्ण सर्वत्र समभाव से विद्यमान हैं । श्रीराधा ही स्वीय लालसा तृप्ति के लिए बारंबार श्रीकृष्ण का नव--नव रूप में नूतन—नूतन साज—सज्जा के द्वारा उपभोग करती हैं । यहाँ पर ही सृष्टि का वैचित्र्य है । इस रीति से ही सृष्टि की प्रक्रिया आदि काल से चलो आ रही है, श्रीराधा की नृत्य लीला रुकेगी नहीं, श्रीचरण की नूपुर ध्वनि का झंकार महाप्रलय के शेष मुहूर्त्त पर्यन्त विश्व ब्रह्माण्ड में झङ्कृत होता रहेगा । जन्म,–मृत्यु सुख—दुःख, भाव–अभाव सब ही उस झङ्कार का फलहै । कान देकर सुनने से उस झङ्कार की अन्तरात्मा मुरली की ध्वनि श्रवणगोचर हो भी सकती है । प्राणबन्धु मुरलीधर भी मानस पट में उदित होंगे ।

झङ्कार का मूलधन मुरली है । श्रीराधा का सर्वस्व धन भी श्रीकृष्ण है । श्रीकृष्ण से ही महामाया श्रीराधा का उन्मेष श्रीकृष्ण द्विधा विभक्त होते हैं । प्रथम कृष्ण द्वितीय श्रीराधा, कृष्ण में राधा उनकी वशीभूत शक्ति, कृष्ण निस्पन्द गुणातीत परम तत्त्व हैं, राधा तत्त्व में सस्पन्द प्रकृतिमयी राधा मिथ्या भेद ज्ञान की जननी महामाया रूप में प्रकटित होती हैं । विविध–तत्त्व–उद्भावन करके एक ही कृष्ण को अनेक रूप में प्रदर्शन करती है। वह पुरुष अनन्त ब्रह्माण्ड सृजन करनेके बाद अनेक मूर्त्तियों से उनमें प्रविष्ट हुआ । श्रीराधा की लीला में कृष्ण का प्रथम विकार वासुदेव क्रमशः सङ्कर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध है, अनन्तर सूक्ष्म–स्थूल सृष्टि होती है । विभिन्न ग्रन्थों में इस के विभिन्न नाम व्यवस्थितहैं । जैसे तुरीय सुषुप्ति, स्वप्न, जाग्रत, शब्द ब्रह्म, नाद, विन्दु एवं वीज है ।

परा, पश्यन्ती, मध्यमा, बैखरी, शक्ति, सदाशिव, ईश्वर एवं शुद्ध विद्या, महत् अहङ्कार, बुद्धि, मन इत्यादि । किन्तु एक कृष्ण ही नाना रूपों में विलसित है । कारण रूप में आप त्रिगुणमय अथवा सर्वगुणातीत वासुदेव, लिङ्गशरीरी, तमोमय सङ्कर्षण सूक्ष्म में आप प्रद्युम्न, स्थूल में सृष्ठिकर्त्ता राजसी अनिरुद्ध हैं । जीवदेह के मूलाधार कमल में अनिरुद्ध, स्वाधिष्ठान में प्रद्युम्न, नाभि में मणिपुर में सङ्कर्षण, हृदय में वासुदेव श्रीकृष्ण, कण्ठ में अनाहत पद्म में राधा–कृष्ण, भ्रूमध्य में परम कारण कृष्ण–चरण एवं शिरः पद्म सहस्रार में एकमेवाद्वितीय परमातिपरम निर्विकार परम ज्योति भगवान् श्रीकृष्ण हैं । श्रीराधा उनकी बारंबार विभिन्न नाम रूपों में भजन करती है, उस परिवर्त्तन में कृष्ण का प्रथम नाम वासुदेव है । इस अवस्था में कृष्ण तुरीय भावापन्नहैं । सृष्टि का भी अतिक्षीण उद्रेक होता है, इसके पहले ही मुरली ध्वनि हुई है, उसकी ध्वनि से उद्भूत राधा वासुदेव के समीप उपस्थित होकर मैं और तुम को प्रकाश करती है, । ध्वनि विस्तार के साथ ही तुरीय अवस्था के वाद सुषुप्ति का आगमन हुआ, वासुदेवके वाद ही सङ्कर्षण, कर्षण आकर्षण का अधिपति ही सङ्कर्षण है । अध्यवसायिनी राधा अव स्वयं बुद्धि रूप में सृष्टि स्थित्यन्त–कारिणी कामना सङ्कर्षण में लगाकर प्रकाश कर दिया । तुम हुताशन और मैं स्वाहा त्रिगुणातीत वासुदेव अहङ्कार रूप तम से आक्रान्त होकर कृष्ण काम और राधा इच्छा हुई है । काम की इच्छा रूप ही कामना सिद्धि है । सिद्धि है कृष्ण और कामना है, राधा । कामिनी राधा निज कामनावश दूरागत मुरलीधारी की मुरली ध्वनि के साथ नूपुर की ध्वनि विस्तार कर घुमतो रहती हैं । उसकी उत्तेजना से ही कृष्ण में सुषुप्ति के अनन्तर स्वप्न का उदय हो जाता है । श्रीराधा ने

उनको समझा दिया, तुम काम और मैं रति हूँ। रमण प्रिया राधा इससे भी सन्तुष्ट न होकर रमणी रूप होकर रमण को प्रकट किया। राधा लालसा, कृष्ण सन्तोष, कृष्ण वीज, राधाक्षेत्र, विश्व बीजा-रोपित हुआ।

विश्व-योनि अव्यक्त कृष्ण का विज्ञानमय कोष है। काल शक्ति राधा है। काल शक्ति के विवर्त्तन से अव्यक्त का प्रथम रूपान्तर मह त्तत्त्व है। कृष्ण यहाँ पर वासुदेव हैं। महत्तत्त्व से विद्युत् के समान सृष्टि प्रकाश पाती है, उस के प्रथम है आदित्य पश्चात् ग्रहादि एवं नीहारमय तनु रूपमें पृथ्वी गठन के उपयुक्त उपादानउपकरणादि है। द्वितीयतः महत् के विकार से कर्षण-आकर्षण शक्ति का अधिपति एवं अग्नि का प्रकाशक सङ्कर्षण है। इस के बाद ही विविध शक्ति सम्पन्न प्रद्युम्न हैं। अनन्तर उक्त समुदय एकत्र एवं सञ्चित होकर राधा रूप कारण सलिल में कृष्ण का तीर्थ स्वरूप वीज न्यस्त हुआ, उससे ही विश्व बीज की उत्पत्ति हुई एवं इस वीज में विन्यस्त कर्म उद्गत होनेके बाद ही पृथ्वी नामक पदार्थ की उत्पत्तिहुई। वह विविध नाम व रूप से अभिव्यक्त जगत् सृष्टि के पहले किरणमाला के आश्रयीभूत अंशु माली के समान स्वयं प्रकाश स्वयं सिद्ध कृष्ण में सन्निवेशित अधुना यह प्रकाश पाया। आदि, मध्य, अन्तहीन श्रीकृष्ण की अपार अनन्त महिमा है, श्रीमती राधिका इस को अभिव्यक्त करती रहती हैं।

श्रीराधा का नृत्य अविराम गतिशील है। श्रीकृष्ण के बल से बलवती राधा निज सत्ता की प्रतिष्ठा में महाप्रयासी हैं। संसार की रचना में आप ही सक्रियहैं। श्रीकृष्ण कुटुम्वमात्रहैं। कृष्ण के निकट आपने प्रकट कर दिया है। कि मैं और तुम यह शब्द, अर्थ, प्रत्यय, मुरलीरव, मूर्च्छनापति--पत्नी व संसार है। शब्द पाठ, अर्थ कृष्ण महिमा है। रचना प्रत्यय--प्रीति है। रचना में लोखिका श्रीराधा, मसी कृष्ण हैं। शब्द राशि राधा, कृष्ण-उसका अर्थ है। उभय के योग से ही गोलोक निवासी परिपूर्ण एकतत्त्व हैं। आप ही शब्द का मूल कारण हैं, श्रवण का श्रवण हैं, रचना का भी एकमात्र उद्देश्य श्री कृष्ण हैं। आप अघटन घटन पटीयसी श्रीराधाके आवरण में वद्ध हैं। कविवर चण्डीदास ने ठीक ही गाया है—

से राधारमणी रसशिरोमणि। तोमारे करिल बन्ध॥

श्रीगीतगोविन्दकार ने भी कहा है—

कंसारिरपि संसारवासनावद्धशृङ्खलाम्।
राधामाध्याय हृदये तत्याजव्रजसुन्दरीः॥

महानुभाव के मत में—

नामश्चिन्तामणिः कृष्णश्चैतन्योरसविग्रहः।
नित्यः शुद्धः पूर्णो मुक्तोऽभिन्नत्वान्नामनामिनः॥

श्रीहरिदास शास्त्री

—*—

प्रस्तुत लेखमें निम्नलिखित ग्रन्थों से विवरण गृहीत हुआ है-गौतमीयतन्त्र, नील, वृहन्नीलतन्त्र, उत्तरतन्त्र, राधातन्त्र, सारदा तिलक, कुलार्णवतन्त्र, विष्णु, वायु, ब्रह्माण्ड ब्रह्मवैवर्त्त, कालिकापुराण, वैष्णव पदावली चैतन्य चरितामृत, राधा कृष्णार्चन दीपिका: वेद, उपनिषद् ब्रह्मसूत्र, शाङ्करभाष्य, सांख्य दर्शन, योगदर्शन, व्यासभाष्य ब्रह्म संहिता, सिद्धान्तरत्न, हरिभक्ति विलास, श्रीमद्भागवत।

एक सत् अद्वितीय परमानन्द वस्तु को विभिन्न एवं अभिन्न रूप में देखना ही प्रस्तुतलेखका प्रधान लक्ष्य है, वह भी श्रीहरिनाम के आधार पर। पूर्ण शक्तिमत् तत्त्व श्रीकृष्ण है, श्रीराधा भी परिपूर्ण शक्ति तत्त्व हैं।

"कृष्णनामराधानाम उपासना रसधाम" इस रीति से प्रस्तुतलेख लक्ष्य में पर्यवसित हुआ हैं। एक उपास्य तत्त्व की चिन्तन धारा कितनीहैं,-उसका नामतः सङ्कलन प्रस्तुत लेखमें हैं। जन्माद्यस्य यतः कार्येष्वभिज्ञः, स्वराट्, सत्यं परं धीमहि" लेखका मूल सूत्र है।



❁❁ श्रीश्रीगदाधरगौराङ्गौ जयतः ❁❁

❁ श्रीश्रीगोविन्दवृन्दावनम् ❁

❁❁ ॐनमः श्रीकृष्णाय ❁❁

एकदा शङ्करं द्रष्टुं स्वपुत्रं कृष्ण–तत्परम् ।
तस्याश्रमं ययौ प्रीत्या भगवांश्चतुराननः ॥१॥
ददर्श लोक नाथेशं ध्यायन्तञ्च जनार्दनम् ।
प्रेमवारि-समाकीर्णं रोमाञ्चित तनु श्रियम् ॥२॥
तमुत्थाप्य प्रियं दोर्भ्यां कृष्णभक्तं पितामहः ।
पुलकावलि--हृष्टाङ्गः सस्वजे प्रेम विह्वलः ॥३॥
दृष्ट्वा देवो महाभक्त्या शङ्करस्तु पितामहम् ।
तस्याग्रे भगवद् बुद्धया दण्डवत् पतितो भुवि ॥४॥
पाद्यार्घ्यमधुपर्काद्यैं र्यथाविधि समचर्चयत् ।
विश्रान्तं सुखमासीनं पप्रच्छ स्वागतं ततः ॥५॥

एक दिवस भगवान् चतुरानन कृष्ण तत्पर स्वपुत्र शङ्कर को प्रीति पूर्वक देखने के लिए उनके आश्रम पर पधारे थे ॥१॥

वहाँ जाकर आपने प्रेमवारि समाप्लुत रोमाञ्चित कलेवर श्री जनार्द्दनध्यान निमग्न लोकनाथ को देखा ।२।

आनन्द से पुलकायित शरीर, प्रेमविह्वल पितामहने प्रियकृष्ण भक्त को दोनों भूजायों के द्वारा उठाकर आलिङ्गन किया ।३

श्रीशङ्कर देवने पितामहको देखकर भगवद् बुद्धि से भक्ति पूर्वक उनके सम्मुख में दण्डवत् भूमि में गिर कर प्रणाम किया ।४।

पाद्य, अर्घ्य, मधुपर्क आदि के द्वारा आपने पितामहका यथा विधि पूजन किया, विश्राम के अनन्तर पितामह सुख पूर्वक आसन में

सन्तुष्ट तमथोवाच महाभागवतः प्रभुः ।
नन्दपुत्रे भगवति कृष्णे वृन्दावनेश्वरे ॥६॥
किन्ते भक्ति समुत्पन्ना सुदृढ़ा प्रेमलक्षणा ।
धर्मार्थ काम मोक्षेषु कच्चित्ते निस्पृहं मनः ॥७॥
कच्चित् कीर्त्तयसे कृष्ण—गुण--नामानिसर्वदा
गुरोः कारुणिकस्येदं श्रुत्वा च सह भाषितम् ॥८॥
विनयावनतो भूत्वा शङ्करो वाक्यमब्रवीत् ।
विधाय विविधा वाचः कृष्णपादाब्जलालसः ॥९॥
प्रेमानन्दमदोन्मत्तः पपात धरणीतले
शंकरस्य प्रवोधार्थ ततो यत्नैर्मनो भृशम् ।
परमं सुस्थिरीकृत्य रहस्यं कथ्यते रहः ॥१०

ब्रह्मोवाच—

विनयादिगुणै स्त्वं हि दयितः परमो मम
विशेषतः कृष्णपादसरोजैकान्तभक्तितः ॥११

उपवेशन करने पर शंकर जीने स्वागत प्रश्न किया ।५।

महा भागवत प्रभुने शंकर जीके शिष्टाचार से सन्तुष्ट होकर कहा, वृन्दाबनेश्वर नन्दपुत्र भगवान् कृष्ण के प्रति प्रेमलक्षणा सुदृढ़ा भक्ति तुम्हारी उत्पन्न हुई ? एवं धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, के प्रति भी तुम्हारे मन निस्पृह हुआ है, ? ।६।७।

तुम सर्वदा श्रीकृष्णके गुण नाम समूह का कीर्त्तन करते हो ? कारुणिक गुरुदेव के यह वचन शुनकर कृष्ण पादाब्ज लालस शङ्करने विनयावनत होकर अनेकानेक दैन्योक्ति की एवं प्रेमानन्दमदोन्मत्त होकर धरणीतल में गिर पड़ा । पितामह शङ्करके प्रवोधन के लिए अतिशय यत्न से मन को सुस्थिर कर एकान्तमें रहस्य वार्त्ता कहने लगे ।८।९।१०।

यद्विना नापि विज्ञातु राधां वृन्दावनेश्वरीम् ।
तत्ते गुह्यं प्रबक्ष्यामि सावधान—मनाः शृणु ॥१२॥
वनं वृन्दावनं नाम तस्य धाम मनोहरम् ।
अमृतं शाखतं दिव्यं गुणातीतं सनातनम् ॥१३॥
अनन्तानन्दसंयुक्तं सर्वलोकैक--वाञ्छितम् ।
अनेक कोटि सूर्य्याग्नितुल्यवर्च्चसमव्ययम् ॥१४॥
सर्वदेवमयं गुह्यं सर्वप्रलयवर्जितम् ।
असंखयमजरं सत्यं जाग्रत्स्वप्नादिवर्जितम् ॥१५
मनोरम निकुञ्जाढ्यं सर्वत्तु सुखसंयुतम् ।
तेजसात्यद्भुतं रम्यं नित्यमानन्दसागरम् ॥१६

ब्रह्माजीने कहा—

विनयादिगुणयुक्त होने से विशेष कर श्रीकृष्ण चरणार विन्द की भक्ति से आप्लुत अन्तःकरण होने के कारण तुम मेरा परम प्रिय हो ॥११॥

जिस के विना श्रीवृन्दाबनेश्वरी श्रीराधा का परिज्ञान सम्भव नहीं हैं, उस गोपनीय तत्व को मैं कहता हूँ सावधान मानस होकर शुनो ॥१२॥

वृन्दाबन नामक वन उनका धाम है, और अत्यन्त मनोहर है, वह अमृत, शाश्वत, दिव्य, गुणातीत, सनातन स्वरूप है, ॥१३॥

अनन्त आनन्द संयुक्त समस्त लोकों के एकमात्र वांछित अनेक कोटि सूर्य-अग्निके समान कान्ति विशिष्ट एवं अव्यय स्वरूप है ।१४

सर्व देवमय, गोपनीय, सर्व प्रलय वर्ज्जित, असीम, अजर सत्य एवं जाग्रत-स्वप्नादि, वर्जित है ॥१५॥

मनोरम निकुञ्जके द्वारा परिपूर्ण, सकल ऋतुयों में सुखकर,

न तत्र तपते सूर्य्यो न शशाङ्को न पावकः।
नहि वर्णयितुं शक्यं कल्प कोटि शतैरपि ॥१७॥
चतुर्दारसमायुक्तं रम्यं गोपुरसंयुतम्।
नन्दाद्यै र्द्वारपालैश्च सुनन्दाद्यैः सुरक्षितम् ॥१८॥
आरुढ़ यौवनोल्लास दिव्य गोपीभिरावृतम्।
मध्ये तु मण्डपं दिव्यं राजस्थानं महोत्सवम् ॥१९॥
माणिक्य–स्तम्भ साहस्रं जुष्टरत्नमयंशुभम्।
तन्मध्येऽष्टदलं पद्ममुदयार्क--समप्रभम् ॥२०॥
तन्मध्ये कर्णिकायान्तु सावित्र्यां शुभदर्शनम्।
ईश्वर्य्या सह गोबिन्द स्तत्रासीनः परः पुमान् ॥२१॥
इन्दीवरदलश्यामः सूर्य्यकोटि–समप्रभः।
युवा कुमारः स्निग्धाङ्गःकोमलावयवैर्युतः ॥२२॥

तेजके द्वारा अति अद्भुत,रम्य, एवं नित्य आनन्द सागर स्वरूप हैं॥ वहाँपर प्राकृत सूर्य, शशाङ्क, अनल, प्रकाशित नहीं होते हैं, उनकी महिमा का वर्णन कल्प कोटि शत के द्वारा भी नहीं होसकता है।१७

चतुर्द्वार युक्त रम्य गोपुर संयुत है। एवं नन्दादि, सुनन्दादि द्वारपालों से वह सुरक्षित है॥१८

आरुढ़ यौवनोल्लास युक्त दिव्य गोपीयों से आवृत हैं, एवं मध्य स्थल पर राजस्थान महोत्सव रूप दिव्य मण्डप शोभित हैं॥१९॥

सहस्रमाणिक्यस्तम्भ है, जिस में रत्न मण्डित है, उस के मध्य में सद्योदित सूर्य के समान कान्तियुक्त एक अष्टदल कमल हैं।२०

उसके मध्य में लीला विस्तार कारी एक कर्णिकाहै, जिसमें शुभदर्शन पर पुमान् ईश्वर श्रीगोविन्द श्रीभानुनन्दिनी के साथ उपविष्ट हैं।२१

आप इन्दीवर दल के समान श्याम वर्ण, कोटि सूर्य के समान

विलोल–पुण्डरीकाक्षः सुभ्रून्नत--युगाङ्कितः।
कुन्द स्रज शुभ्रदन्ताढ्यो मधुराधरविद्रुमः ॥२३॥
परिपूर्णेन्दु सङ्काश सुस्मितानन पङ्कजः।
तरुणादित्य वर्णाभ्यां कुण्डलाभ्यां विराजितः ॥२४॥
सुस्निग्ध-नील--कुटिल-कुन्तलैरूपशोभितः।
स्वर्णहार स्रगासक्त कम्बुग्रीवाविराजितः ॥२५॥
वालार्क-कोटिशङ्काशैः कौस्तुभाद्यैः सुभूषितः।
वालातपनिभ श्लक्ष्ण पीताम्बर-समन्वितः ॥२६॥
अशेष-चन्द्र संकाश-नखपङ्क्तिभिरावृतः।
श्यामै गौरैश्च रक्तैश्च शुक्लैश्च पार्षदै र्वृतः ॥२७॥
दिव्य चन्दन लिप्ताङ्गो वनमालाविभूषितः।

कान्ति, नव यौवन में स्थित, कोमल अवयवोंसे युक्त स्निग्धाङ्ग हैं।२२

आप के पुण्डरीक के समान नयन द्वय अति चञ्चल है, भ्रू युगल भी समुन्नत है, कुन्दपुष्प के समान दन्तराजि अति शुभ्र है, मधुर अधर भी विद्रुम के समान रक्तिम है।२३।

आनन पङ्कज परिपूर्णेन्दु के समानमनोरम हास्यसे शोभित है, तरुण आदित्य के समान सुन्दर कुण्डलद्वय के द्वारा भी वदन कमल सुशोभित है।२४॥

आप सुस्निग्ध--नील–कुटिल कुन्तलों से शोभित है, स्वर्णहार माला के प्रति आसक्त कम्बुग्रीवा से भी सुशोभित हैं।२५।

नवोदित कोटि सूर्य के समान कौस्तुभ आदि से सुन्दर भूषित हैं, वाल आतप की भांति कोमल पीताम्वर युक्त भी है।२६

अशेष चन्द्र के समान नख पङ्क्ति से हस्त कमल चरण कमल सुशोभित है। एवं श्याम-गौर–रक्त–एवं शुक्ल वर्ण पार्षदों से आप परिवृत हैं।२७

नाना केलि कलाधीशो रास लीला विशारदः ॥२८॥
कोटिकन्दर्पलावण्यः सौन्दर्यनिधिरच्युतः ।
वामाङ्गसंस्थिता देवी राधिका प्राणवल्लभा ॥२९॥
हिरण्य वर्णा हरिणी सुवर्णरजतस्रजा ।
सर्व लक्षण-सम्पूर्णा यौवनारम्भा विग्रहा ॥३०॥
रत्न कुण्डल-संयुक्ता नीलकुञ्चित-शीर्षजा ।
दिव्यचन्दनलिप्ताङ्गी दिव्यपुष्पोपशोभिता ॥३१॥
मन्दारकेतकीजाती-पुष्पाञ्चित सुकुन्तला ।
सुभ्रूः सुनासा सुश्रोणी पीनोन्नत पयोधरा ॥३२॥
परिपूर्णेन्दुसंसक्त-सुस्मितानन-पङ्कजा ।
नानारत्नविचित्राढ्या कनकाम्बुज शोभिता ॥३३

सर्वाङ्ग, दिव्य चन्दनों से लिप्त है, और वनमालासे विभूषित हैं। अनेक केलिकला का अधीशहै, एवं रासलीला विशारद हैं ।२८॥

श्रीअच्युत कोटि कन्दर्प के समान लावण्य युक्त सौन्दर्यनिधि हैं, वामाङ्ग में देवी प्राणवल्लभा राधिका विराजिता है, ।२९।

श्रीमति राधिका हिरण्यवर्णा, हरिणा, (स्त्री विशेष) सुवर्ण रजत मालायों से शोभिता, सर्वलक्षण सम्पूर्णा, एवं यौवन के आरम्भ वयः क्रम में स्थिता है ।३०।

रत्न कुण्डल संयुक्ता नील कुञ्चित केश पाश शोभिता, दिव्य चन्दन चर्चित कलेवरा, एवं दिव्य पुष्पों के द्वारा उपशोभिता हैं ।३१

मनोरम कुन्तल श्रेणी मन्दार केतकी-जाती पुष्णों से सुशोभित है, सुभ्रू, सुनासा, सुश्रोणी, पीनोन्नत पयोधरा है, ।३२।

आनन पङ्कज मनोरम हास्ययुक्त परिपूर्ण चन्द्रमा के समान है ।, नाना रत्नों से भूषित, कनकाम्बुज से शोभित है, ॥३३॥

हार केयूर-कटकैरङ्गुरीयैर्विभूषिता ।
गृहीत्वा चामरान् रम्यान् सुधाकर समप्रभान् ॥३४॥
सर्वलक्षणसम्पन्ना मोदते पतिमच्युतम् ।
आद्यैः परिजनैर्व्यक्तै नृत्यैश्च परिसंयुतः ॥३५॥
मोदते राधया सार्द्धं नित्यैश्वर्य्या परः पुमान् ।
श्रुत्वैतद्ब्रह्मणो वाक्यं शिवः प्रोचेऽथसादरम् ॥३६॥
द्वापरान्तेऽभवत् कृष्णो नित्यत्व मुच्यते कथम् ।
ततो ब्रह्मा शिवं प्राह चिन्तयित्वा पुरातनम् ॥३७॥
वाङ्मनो गोचरातीतं सर्वं वेदेसु गोपितम् ।
प्राकृते प्रलयं प्राप्ते व्यक्तेऽव्यक्तं गतेपुरा ॥३८॥
शिष्टे ब्रह्मणि चिन्मात्रे कालमायाति चाक्षरे ।
ब्रह्मानन्दमये लोके व्यापी वैकुण्ठ संज्ञकः ॥३९॥

हार केयूर-कटक-अङ्गुरीय आदि से विभूषित हैं, सुधाकर के समान शुभ्र रम्य चामर हस्त में लेकर सर्व लक्षण सम्पन्न श्रीअच्युत की सेवा करती है। नृत्य गीत सङ्गीत परायण परिजनोंके साथ विराजित है ।३४।३५॥

इस प्रकार नित्य ईश्वरी राधा के साथ श्रीपुरुषोत्तम नित्य आनन्दप्राप्त होतेहैं। श्रीब्रह्मा जी से वर्णन को शुनकर शिवजी आदर पूर्वक वोले ।३६॥

कृष्ण तो द्वापर के अन्तः काल में आविर्भूत होते हैं ? उनको नित्य रूप से आपने कैसे कहा। अनन्तर पुरातन कथा का चिन्तन कर ब्रह्मा शिव को कहे ।३७।

वाक्य मनके अगोचर, समस्त वेदोंमें गुप्तरूप मेंरहनेवाले वैकुण्ठ नामक भगवल्लोक है। प्रकृति प्रलय होने के वाद, व्यक्त, अव्यक्त में लीन होने पर एकमात्र अक्षर चिन्मात्र ब्रह्म अवशेष रहजातेहैं, ब्रह्मा

निर्गुणो नाद्यमन्तश्च वर्त्तते केवलेऽक्षरे ।
अक्षरं परमं ब्रह्म वेदानां स्थानमुत्तमम् ॥४०॥
तल्लोकवासी तस्थौ च ततोवेदः परात्परः ।
चिरंस्तुत स्ततस्तुष्टः प्रत्यक्षं प्राह ता अपि ॥
तुष्टोऽस्मि श्रुतयः प्राह मनसा यदभीप्सितम् ॥४१॥

श्रुतय ऊचुः—

नारायणादि रूपाणि ज्ञानान्यस्माभिरच्युतः ।
सगुणं ब्रह्म तत् सर्व वस्तुवुद्धिर्न तेषु नः ॥४२
ब्रह्मेति पठ्यतेऽस्माभि र्यद्रूपं निर्गुणं परम् ।
वाङ्मनोगोचरातीतं ततो न ज्ञायते तु यत् ॥४३॥
आनन्दमात्रमपि यद्वदन्तीह पुराविदः ।
तद्रूपं दर्शयास्माकं यदि देयो वरो हि नः ॥४४॥

नन्दमय लोक में वैकुण्ठ नामक स्थान व्याप्त होकर रहता है ॥३९॥

वह प्राकृत गुणों से अतीत है, उनका आदि अन्त भी नहीं है, अक्षर स्वरूपहैं, अक्षर परम ब्रह्महीं सववेदों का एकमात्र आधार है ४०

अनन्तर तल्लोक वासी जनगण परातम पुराण पुरुष की उपासना करते हैं। वहुकाल स्तुति करने पर संतुष्ट होकर प्रत्यक्ष रूप से उन सव को कहा, श्रुतियों ने भी स्तुति की, अनन्तर 'मैं संन्तुष्ट हूँ-जो कुछ मन में है कहो' आपने कहा ॥४१॥

श्रुतियां वोलीं—

हे अच्युत ! हम सवने श्रीनारायणादि रूप को जाना है, वेसव सगुण ब्रह्म होने के कारण उन में हमारी वस्तु वुद्धि नहीं हुई ॥४२॥

हम सवने निर्गुण परम ब्रह्म का वर्णन किया है, वाक्य मनके अगोचर व अतीत होने से वह वस्तु ज्ञात होने में हमसव असमर्थ हैं।४३

प्राचीन मनीषीगण जिनको आनन्दमात्र ही कहते हैं, हमारे

श्रुत्वैतद्दर्शयामास स्वरूपं प्रकृते परम् ।
केवलानुभवानन्द मात्रमक्षरमव्ययम् ॥४५
यत्र वृन्दावनं नाम वनं कामदुघै र्द्रुमैः ।
मनोरम निकुञ्जाढ्यं वसन्त सुख सेवितम् ॥४६॥
यत्र गोवर्द्धनो नाम सुनिर्झर दरीयुतः ।
रत्न धातुमयः श्रीमान् सुपक्षिगण संकुलः ॥४७॥
तत्र निर्मल पानीया कालिन्दी सरितां वरा ।
रत्नवद्धोभयतटीहंसपद्मादिसंकुला ॥४८॥
नानारासरसोन्मत्तो यत्र गोपी कदम्बकः ।
तत् कदम्ब मध्यस्थः किशोराकृतिरच्युतः ॥४९॥
नित्य यौवन संयुक्तो नित्यानन्द कलेवरः ।
सुकुञ्चितकचन्यस्तो लसच्चारुशिखण्डकः ॥५०॥

प्रति वर प्रदान की इच्छा हो तो वह रूप हमें दर्शन करावें ॥४४॥

वह वचन शुनकर स्वरूप को सन्दर्शन कराया, जो प्रकृति से पर है, एवं केवल--अनुभवानन्द मात्र अक्षर-अव्यय स्वरूप हैं ।४५॥

जहां वृन्दावन नामक वन है, वह वन कामद वृक्षों से ही परिपूर्ण है, मनोरम निकुञ्जों से शोभित व वसन्त सुखसेवित है ।४६।

जहाँपर श्रीमान गोवर्द्धन गिरि विराजित है, सुन्दर निर्झर दरी युक्त है, रत्न धातुमय, एवं सुपक्षिगण परिव्याप्त है ।४७।

वहाँपर समस्त नदीयों में श्रेष्ठा निर्मल जल पूर्ण यमुना विराजित हैं, उनके उभय तट रत्न से जटित है,हंस पद्मादिसे संकुल है ४८

जहाँपर नाना रासरसोन्मत्त गोपी कदम्व विराजित हैं, उन गोपीकदम्व के मध्य में किशोराकृति अच्युत विराजित है ।४९

आप नित्य यौवन संयुक्त, नित्यानन्द कलेवर सुकुञ्चित केश

लसल्ललाट पाटीर—तिलकालकमण्डितः ।
गण्ड मण्डल संसर्ग—चलन्मकर कुण्डलः ॥५१॥
प्रफुल्ल पुण्डरीकाक्षः सुस्मिताननपङ्कजः ।
कुन्द स्रगाभ-दन्ताढ्यो मधुराधरविद्रुमः ॥५२॥
प्रातरुद्यत् सहस्रांशुनिभः कौस्तुभ शोभितः ।
चन्दनागुरु कस्तूरी कुङ्कुमाक्ताङ्ग धूसरः ॥५३॥
सिंह स्कन्ध निभैः श्रेष्ठैः पीनै रंसै विराजितः ।
सुरम्याधर संसक्त—कूजद्वेणु विनोदवान् ॥५४
संवीत पीत वसनः किङ्किणी विलसत् कटिः ।
शरज्ज्योत्स्ना प्रतीकाश—नखपङ्क्ति-विराजितः ॥५५

कलाप युक्त एवं मनोहर शिखिपुछ से शोभित हैं ।५०॥

शोभित ललाट फलक में मनोहर तिलक एवं इतस्तत विक्षिप्त अतकावली विराजित हैं । गण्डमण्डल संसर्गि चञ्चल मकर कुण्डल भी शोभित है ।५१।

प्रफुल्ल पुण्डरीक के समान नेत्रद्वय है । आनन्द पङ्कज मनोहर स्मित हास्यसे शोभितहैं । कुन्द पुष्प के समान दन्त श्रेणी व विद्रुम के समान मधुर अधर भी है ॥५२।

प्रातः कालीन नवोदित सूर्य की कान्ति की भाँति कण्ठ स्थल में कौस्तुभ शोभित है, श्रीअङ्ग चन्दन अगुरु कस्तुरी कुङ्कुम से धूसरित है, ।५३।

सिंह के स्कन्धके समान श्रेष्ठ पीन स्कन्ध से शोभित हैं, सुरम्य अधर में संसक्त वेणु वादन परायण हैं, ॥५४।

पीत वसन के उत्तरीय व वसन शोभित है । कटि में किङ्किणी विलसित है । शरत् कालीन ज्योत्स्ना के समान नख पंक्ति विरा जित हैं ॥५५॥

कृष्णै गौरैश्च रक्तैश्च शुक्लैः पारिषदै र्वृतः ।
सदारासरसामोदविहारामृतसागरः ॥५६
कोटिकन्दर्पलावण्यसौन्दर्य्यनिधिरव्ययः ।
दर्शयित्वेति प्राह वृन्दावनचरः स्वयम् ॥५७॥

श्रीवृन्दाबनचन्द्र उवाच—

युष्माभि र्यदिदं दृष्टं रूपं दिव्यं सनातनम् ।
निष्कलं निर्म्मलं शान्तं सच्चिदानन्दविग्रहम् ॥५८
पूर्णचन्द्र पलाशाक्षं नातः परतरं मम ।
इदमेव वदन्त्येते वेदाः कारण कारणम् ॥५९
सत्यं व्यापि परानन्दं चिन्मयं शाश्वतं शिवम् ।
यद्रूपमब्ययं ब्रह्म मध्याद्यन्त विवर्जितम् ॥६०॥
सर्वरूपमयं रम्यं सर्ववेदाद्यगोचरम् ।
मायातीतं महादिव्यं श्यामं सौम्यकलेवरम् ॥६१

कृष्ण वर्ण गौर वर्ण—रक्त वर्ण-एवं शुक्लवर्ण पारिषदों से आवृत हैं । सदा रास-रसामोद-विहारामृत सागर हैं ॥५६॥

कोटि कन्दर्प के समान लावण्य सौन्दर्य के अव्ययनिधि वृन्दावन विहारीने रूप को प्रदर्शन कराकर स्वयं कहा ।५७।

वृन्दावन चन्द्रने कहा—

तुम सवने दिव्य, सनातन, निष्कल, निर्मल, शान्त, पूर्णचन्द्र पलाशाक्ष सच्चिदानन्द विग्रह को देखा, इसके आगे और कोई रूप मेरा नहीं है । वेदगण इस रूप को ही सकल कारण के कारण कहते हैं ॥५८–५९

सत्य व्यापी, परानन्द, चिन्मय, शाश्वत, शिव, यद्रूप आदि मध्य-अन्त विवर्जित अव्यय ब्रह्म हैं ॥६०॥

नानागुण समाकीर्णं गुणातीतं मनोहरम् ।
सुप्रभं सच्चिदानन्दं भक्त्या जानाति विस्तरम् ॥६२

पश्य मदीयो लोकोऽयं यतो नास्ति परात्परः
तुष्टोऽस्मि श्रुतयः प्राह मनसा यदभीप्सितम् ॥६३

श्रुतय ऊचुः

कोटि कन्दर्प लावण्ये त्वयि दृष्टे मनांसि नः ।
कामिनीभावमासाद्य स्मरक्षुब्धान्यसंशयम् ॥६४

यथा तल्लोक वासिन्यः कामतत्त्वेनगोपिकाः ।
भजन्ति रमणं मत्वा चिकीर्षाजनि नस्तथा ॥६५॥

श्रीभगवानुवाच—

दुर्ल्लभो दुर्घटश्चैव, युष्माकन्तु मनोरथः ।
मयानुमोदितः सम्यक् सत्यो भवितुमर्हसि ॥६६॥

सर्वरूपमय, रम्य, सर्व वेदादिके अगोचर मायातीत महादिव्य, सौम्यकलेवर श्यामरूप है ।६१।

नानागुण समाकीर्ण, गुणातीत, मनोहर, सुप्रभ, सच्चिदानन्द रूप को परिपूर्ण रूप से भक्ति के द्वारा ही जाना जाता है ।६२

मदीय लोक को देखो, जिस से परात्पर और कुछ भी नहीं है । श्रुतियों ! मैं संतुष्ट हूँ, जो कुछ इच्छा हो, प्रकट करो । ६३।

श्रुतियों बोलीं—

कन्दर्प कोटि लावण्य तुम्हें देखकर हमारेमन कामिनी भाव विभावित होकर सुनिश्चित स्मर क्षुब्ध होगये हैं ॥६४॥

जैसे तुम्हारे धाम के अधिवासी गोपिका काम तत्त्व से रमण मानकर भजन कर रही है, हमसब की भी वैसाभजन करनेकी इच्छा जगी है ॥६५॥

आगामिनि विरिञ्चौ तु जाते सृष्ट्यर्थमुद्यमे ।
कल्पं सारस्वतं प्राप्य व्रजे गोप्यो भविष्यथ ॥६७॥

पृथिव्यां भारते क्षेत्रे माथुरे मम मण्डले ।
वृन्दावने भविष्यामि मयान् वो रासमण्डले ॥६८॥

जारधर्मेन सुस्नेहं सुदृढ़ं सर्वतोऽधिकम् ।
मयि संप्राप्य सर्वापि कृतकृत्या भविष्यथ ॥६९॥

श्रुत्वैतच्चिन्तयत्यस्ता रूपं भगवतः परम् ।
उक्तकालं समासाद्य गोप्यो भूत्वा व्रजं गताः ।७०॥

ततोऽयं द्वापरस्यान्ते कृष्णः सर्वेश्वरेश्वरः ।
श्रुतीनां वरदानार्थं सोऽपि तद् गोचरोऽभवत् ॥७१॥

यस्य पादनख ज्योत्स्ना परं ब्रह्मे ति शब्दितम् ।

श्रीभगवान् वोले—

तुम सव को मनोरथ दुर्ल्लभ–एवं दुर्घट है, मेरे अनुमोदन से सव सफल होता है ।६६।

आगामी सृष्टि के लिए ब्रह्मा का आविर्भाव होनेपर सारस्वत कल्प नाम होगा, उस समय तुम सव व्रज में गोपी होकर आविर्भूत होगी, ।६७।

पृथिवीस्थ भारत क्षेत्रके मथुरा मण्डलस्थ वृन्दावन के रास मण्डल में तुम सवके प्रिय वनूँगा ।६८।

जार धर्म से सर्वतोऽधिक सुदृढ़ सुस्नेह होता है, मुझ को प्राप्त कर तुमसव कृत कृत्य होजाऊगी ।६९।

ये वचन सुनकर श्रुतियां भगवान् के रूप का चिन्तन करने लगीं, एवं उक्तकाल आनेपर व्रज में वे गोपीरूपमें आविर्भूत हुई ।७०

अनन्तर द्वापर के अन्तिम भाग में सर्वेश्वरेश्वर श्रीकृष्ण श्रुतियों को वर देने के लिए प्रकट हुए ॥७१॥

स एव वृन्दावन भूविहारी नन्दनन्दनः ॥७२॥
कृष्णचन्द्र पदद्वन्द्व मकरन्देषु लम्पटः ।
प्रेमाश्रु लोचनो भूत्वा शङ्करो वाक्यमब्रवीत् ॥७३॥
वयञ्च वैष्णवा देव गुरोऽपि विद्वदात्मनः ।
यत् पिवामो मुहुस्तत्तः पुण्यं कृष्णकथामृतम् ।७४।
भगवान् देव देवेश लोकनाथ जगत्पते ।
ब्रूहि तत्त्वं पितर्मह्यं गोपीनाम युतं शुभम् ।७५।
कृष्णपारिषदादीनामग्रजस्य महात्मनः ।
सर्वेषां कृपया ब्रूहि नाम कर्मानु कीर्त्तनम् ।७६।

ब्रह्मोवाच—

साधु साधु कृतः प्रश्नोभवता भगवत् प्रियः ।
यतः साधु स्वभावस्त्वं कृष्णपादाब्जतत्परः ।७७।

जिनके पादनखज्योत्स्ना को ही पर ब्रह्म कहा जाता है। वह ही श्रीवृन्दावन भूविहारी नन्दनन्दन है ।७२॥

कृष्णचन्द्र पद द्वन्द्वमकरन्द के प्रति समासक्त शङ्कर प्रेमाश्रुपूर्ण लोचन होकर अग्रिम वाक्य कहे थे ।७३॥

हे देव ! हमसव वैष्णव, सुविज्ञ गुरुवर्य्य आप से पुनः पुनः पुज्य कृष्ण कथामृत पान करते हैं ।७४।

हे देव, देवेश, लोकनाथ जगत् पति प्रभु आप गोपीनाम युक्त तत्त्व का वर्णन करें ।७५।

निखिल कृष्ण पारिषदों के अग्रणी व्यक्तियों के नाम कर्मानु कीर्त्तन का कृपया वर्णन करें ।७६।

ब्रह्माजीने कहा—

आपने उत्तम, सर्वोत्तम प्रश्न किया है, क्यों कि आप साधु स्वभाव, भगवत् प्रिय, कृष्ण पादाब्ज तत् पर हैं ।७७

शृणु देव महाभाग रहस्य वेदगोपितम् ।
यत् स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिसृतम् ।७८।

श्रीभगवानुवाच—

एकदाहं गतो हर्षान्महा वैकुण्ठधामनि ।
अपश्यं परमानन्दमूर्त्ति मद्भुतदर्शनम् ।७९।
अष्टवाहुधरं रम्यं महा विष्णुं सनातनम् ।
महार्ह–रत्नमासीनं चारुहासावलोकनम् ।८०।
सूर्यकोटिप्रतीकाश चन्द्रकोटिसुशीतलम् ।
चारुपीताम्बरधरं श्यामसुन्दरविग्रहम् ।८१।
वामाङ्गसंस्थिता देवी महालक्ष्मी महेश्वरी ।
दृष्ट्वैव तं प्रसन्नास्यं सुभ्रुवं सुस्मिताननं ।८२।
प्रवृद्ध प्रेम वाष्पाम्बु पूर्णनेत्रोऽतिविह्वलः ।
भूयोभूयः प्रणम्यैनं किञ्चिद्वक्तुं नतोऽस्म्यहम् ॥८३॥

हे देव ! हे महाभाग ! वेद गोपित रहस्य का श्रवण करें। जोरहस्य,स्वयं पद्मनाभ के मुख पद्म से विनिसृत हुआ है ॥७८

श्रीभगवान् ने कहा—

एकदिन मैं आनन्द से महावैकुण्ठ धाम गया, वहाँपर जाकर अद्भुत दर्शन परमानन्द मूर्त्ति का दर्शन किया ।७९।

अष्ट बाहु, रम्य, सनातन, महाविष्णु महार्ह रत्नासनमें उपविष्ट हैं, उनके अवलोकन चारु हास्य युक्त है ।८०।

कोटि सूर्य के समान कान्ति एवं कोटि चन्द्रके समान सुशीतल हैं, श्यामसुन्दर विग्रह चारुपीताम्बर धारण किएहुए हैं ।८१।

महा लक्ष्मी महेश्वरी बाम भागमें अवस्थित हैं, सुस्मितानन सुभ्रु व–प्रसन्न बदन को देखकर प्रवृद्धित प्रेम वाष्प से परि पूर्ण नेत्र

ततो मा पद्महस्तेन शीतलेनापि वत्सलः ।
उत्थाप्यालिङ्ग्य भगवान् प्रपच्छ स्वागतं यथा ।८४।
तस्येदं बचनं श्रुत्वा कथितं मे मुहुर्मुहुः ।
स्वागतं स्वागतं देव श्रुत्वा तवानुग्रह कारणम् ।८५।
ततो मां कथयामास भगवानादिपूरुषः ।
कृष्णस्य चरितं चित्रं मनोहरमनोहरम्
नित्यं सत्य गुणातीतं ब्रह्मानन्दैक सागरम् ।८६।

महाविष्णुरुवाच—

अहो मूढ़ा न जानन्ति कृष्णस्य नित्यसात्त्वतम् ।
यस्य पादनख ज्योत्स्ना परं ब्रह्मेतिशब्दितम् ।८७।
वनं वृन्दावनं नाम तस्य धाम मनोहरम् ।
नित्यं सत्यं गुणातीतं ब्रह्मानन्दैकसागरम् ।८८।

अतिविह्वल होकर पुनः पुनः प्रणाम करके कुछ निवेदन करने के लिए मैंने प्रणाम किया ।।८२।८३।।

इस के वाद परम वत्सल भगवान् अतिशीतल पद्म हस्त के द्वारा उठाकर आलिङ्गन करके स्वागत प्रश्न किये ।८४।

उनके वचन सुनकर मैंने पुनः पुनः कहा, 'स्वागतं स्वागतं देव तव अनुग्रह कारणम्'' ८५।।

अनन्तर आदि पुरुष भगवानने चित्रमनोहर कृष्णके चरितको कहा, जो नित्य सत्य गुणातीत ब्रह्मानन्दैक सागर स्वरूप हैं ।८६।

महाविष्णुवोले—

आश्चर्यहै कि मूढ़ मानवगण नहीं जानते हैं कि जिन श्रीकृष्ण के पादनखकी ज्योत्स्ना को नित्य सात्त्वत परब्रह्म शब्दसे कहाजाताहै।

उनका धाम अतिमनोहर वृन्दावन नामक वन है, जो नित्य,

अमृतं शाश्वतञ्चैव चिदानन्दसुखात् परम् ।
रसानन्दं महानन्दं नित्यानन्दैककन्दरम् ।८६।
अनन्तं परमानन्दं प्रेमानन्दसुखाश्रयम् ।
यत्रापि गोपिकाः सर्वाः गायन्ति कृष्णमङ्गलम् ।६०।
कल्पद्रुमसमाकीर्णं सुपक्षिगण नादितम् ।
अशेषचन्द्र सूर्याग्नि तुल्यवर्च्च समव्ययम् ।।६१।।
असंख्यमजरं रम्यं सर्ववेदान्तगोचरम् ।
नानापुष्पमयोद्यानं चिदानन्दैककन्दरम् ।।६२।।
प्राकारैश्च विमानैश्च सौरिरत्नमयैर्वृतम् ।
चित् स्वरूपं चिदानन्दं सदाकुण्ठं सनातनम् ।।६३।।
एवमादिरसोपेतं कृष्णधामाप्यनामयम् ।
चतुर्द्वारसमायुक्ता पुरी गोपुरसंयुता ।।६४

सत्य, गुणातीत, ब्रह्मानन्द का सागर स्वरूप हैं ।।८८।।

शाश्वत अमृत रूप है, चिदानन्द सुख से भी अतीतहै, रसानन्द महानन्द एवं नित्यानन्द का एकमात्र उत्स हैं ।८६।।

अनन्त परमानन्द रूप है, एवं प्रेमानन्द सुख का आश्रय भी है जहाँ निखिलगोपिकागण कृष्णमङ्गल गाती रहती है ।६०।।

वह कल्प द्रुमों से व्याप्त है। एवं उत्तम पक्षिगणों से निनादित है, अशेष चन्द्रसूर्य के समान अव्यय कान्ति युक्त हैं ।६१।

सर्व वेदों के अगोचर असंख्य, अजर, रम्य अनेक पुष्पमय उद्यानयुक्त हैं एवं चिदानन्द का मूल भाण्डार है ।६२।

प्राकार व विमानसमूह सूर्य कान्ति युक्त है, वह चित् स्वरूप चिदानन्द सदा अकुण्ठ, सनातनरूप है ।६३।

उक्त प्रकार अनामय श्रीकृष्ण धाम आदिरसयुक्त है। चतुर्द्वार समायुक्त पुरी है, ओर गोपुर से शोभिता है ।६४।

सुनन्दाद्यैश्च गोपालैः पार्षदैश्च सुरक्षिता
मणिकाञ्चन रत्नाढ्य प्राकारै स्तोरणैर्वृता ॥९५।
आरूढ़ यौवनोल्लास दिव्यनारीभिरावृता ।
विमानै गृंह मुख्यैश्च प्रासादैर्बहुभिर्वृता ॥९६॥
तन्मध्ये नगरी दिव्या गोविन्दानन्द धामनी ।
तन्मध्ये मन्दिरं दिव्यं प्रेमधाम महोत्सवम् ॥९७॥
मध्ये सिंहासनं रम्यं सर्वलोकनमस्कृतम् ।
सूर्य कोटि प्रतीकाशं महापद्म मनोहरम् ॥९८॥
तन्मध्ये कर्णिकायान्तु सावित्र्यां शुभदर्शनम् ।
ज्योतिरूपेण मनुना कामवीजेन संस्कृतम् ॥९९॥
ईश्वर्य्या सह गोविन्दि स्तत्रासीनः परः पुमान् ।
रसालजलदश्यामो नित्यानन्दकलेवर ॥१००॥

सुनन्द आदि पार्षद गोपालों के द्वारा वहपुरी सुरक्षिता है, जिस में मणि काञ्चन रत्न युक्त प्राचीर, तोरण आदि विद्यमान है ।९५।

आरूढ़ यौवनोल्लास से शोभित दिव्य नारियों से शोभित है, एवं विमान मुख्य गृह अनेक प्रासादों के द्वारा शोभित है ॥९६।

उसके मध्यमें गोविन्दानन्द धामनी नामक दिव्यानगरी विराजित है, उसके मध्य में प्रेम धाम महोत्सव दिव्य मन्दिर विराजित है।

मध्य में सर्वलोक नमस्कृत कोटि सूर्य्य के समान कान्तियुक्त महा पद्मणि के द्वारा मनोहर कारुकार्य युक्त मनोरमसिंहासन विराजित है ॥९८।

उसके मध्यस्थ समूह लीलाविस्तारकारी कर्णिकामें ज्योतिरूप शुभ दर्शन कामवीज मन्त्र विन्यस्त है ।९९।

वहाँपर ईश्वरी भानुनन्दिनीके साथ रसाल जलदश्याम नित्या

नित्य यौवन संयुक्तो राधिकारतिसागरः ।
वृन्दावन कलाधीशः परमानन्दहेतुकः ॥१०१
प्रेमानन्द कलानन्द विहारामृत नागरः ।
कन्दर्प दर्पनाशाय भङ्गुरभ्रूभुजङ्गमः ॥१०२॥
नासामुक्ता समायुक्तश्चारु वक्त्रारुणेक्षणः ।
चारुचन्दन लिप्ताङ्गो वनमाला विभूषितः ॥१०३
श्रीखण्ड मण्डलोपेतः स्फुरन्मकरकुण्डलः ।
नानारत्नस्रगासक्तकम्बुग्रीवा विराजितः ॥१०४॥
वालार्कार्बुदसंकाशैः कौस्तुभाद्यैः सुभूषणः ।
चारुपीताम्बरधरो रसनां विलसत् कटिः ॥१०५॥

नन्दकलेवर परम पुरुष श्रीगोविन्द विराजित है ।१००।

आप नित्ययौवन संयुक्त, राधिकारति सागर, वृन्दावन कलाधीश परमानन्द के एकमात्र हेतु है ।१०१

आप प्रेमानन्द कलानन्द-विहारामृत नागर स्वरूप है । कन्दर्प कादर्प को विनाश करने के लिए आप को भ्रूलता अद्भुत रीति से विराजित है ।१०२।

नासिका चारु मुक्ता से शोभित है, मुखमण्डलभी अपूर्वशोभित है, भाव पूर्व ईक्षण से नेत्र भी मनोरमहै। श्रीअङ्ग चारु चन्दन से चर्चित है, गलदेश वनमाला से भूषित है ।१०३।

श्रीखण्ड मण्डल से युक्त वदन कमल शोभित है, उस में मकर कुण्डल शोभित हैं, अनेक रत्नों से जटित हार से कम्बुग्रीवा सुशोभित है ॥१०४।

अर्बुद अर्बुद वालसूर्य के समान कान्ति युक्त कौस्तुभादि सुभूषणों से श्रीअङ्ग भूषित है । मनोरम पीताम्बर धारण किए हुए हैं रसना के द्वारा कटिदेश शोभित है ।१०५।

अनन्तचन्द्रसंकाशनखपङ्क्तिभिरावृतः ।
कृष्णैः श्वेतैश्च पीतैश्च रक्तैः पारिषदैर्वृतः ॥१०६॥
नाना केलि कलानाथो नृत्यलीला–विशारदः ।
कन्दर्पार्बुदलावण्यः सौन्दर्यनिधिरच्युतः ॥१०७॥
वामाङ्ग संस्थिता देवी राधिका वार्षभानवी ।
सुन्दरी नागरी गौरी कृष्णहृद्भृङ्गमञ्जरी ॥१०८
विचित्र पट्ट चार्वङ्गी पुष्पाश्चित सुकुन्तला ।
गोविन्ददर्शनाह्लाद दृगञ्चल सु चञ्चला ॥१०९॥
कन्दर्पदर्पनाशाय भङ्गुर भ्रूभुजङ्गमा ।
पीतांशुकांशुकाकर्षि निस्तलस्तनदाड़िमा ॥११०
त्रिभङ्गी-रस आनन्दा प्रेमाङ्गी कृष्णवत्सला ।
मणि किङ्किण्यलंकारशोभितश्रोणिमण्डला ॥१११

अनन्त चन्द्र के समान नख राजि विराजित है। कृष्ण, श्वेत, पीत, रक्त वर्ण के पारिषद के साथविराजित हैं।१०६।

अच्युत नाना केलिकलानाथ,नृत्यलीला विशारद, अर्बुदकन्दर्प के समान लावण्य युक्त, एवं सौन्दर्य के निधि हैं।१०७।

आप के वामभाग में वार्षभानवी देवी सुन्दरी, नागरी गौरी, कृष्ण हृद् भृङ्ग--मञ्जरी राधिका विराजित है ।१०८॥

आप विचित्र मनोरम वसनोंसे भूषितहैं,मनोरमअङ्गसौष्ठव हैं, आपके कुन्तल पुष्पों से भूषित हैं, श्रीगोविन्द दर्शन के लिए आपके नयनाञ्चल चञ्चल हैं।१०९

कन्दर्प दर्प विनाशकारी आपकी भ्रू लता विराजितहै, पीताम्वर को आकर्षण करने में सुदक्ष निस्तल वक्षोज से आप सुशोभित है।११०

आप त्रिभङ्गी रस आनन्द स्वरूप हैं, प्रेमाङ्गी, कृष्णवत्सलाहैं

गोविन्दनेत्र सुखदा गोपी चूड़ाग्रमालिका ।
कृष्णप्रियारविन्दाक्षी विहारामृतदीर्घिका ॥११२।
अनुरागसुधासिन्धो र्हिल्लोलान्दोलविग्रहा ।
कुमारी कृष्ण दयिता कृष्णकृष्णाङ्गभूषिता ॥११३॥
दिव्याङ्गविलसद्वासः प्रपदान्दोलिताञ्चला
रासोत्सवावेशिनीच कृष्णनीतरहः स्थली ॥११४॥
प्रकृत्यागुण रूपिण्यारूपेणपर्य्युपासिता ।
नित्यसत्या गुणातीता सर्वप्रलयवर्जिता ॥११५॥
गृहीत्वा चामरान् रम्यान् चन्द्रार्बुदसमप्रभान् ।
सर्वलक्षणसम्पन्ना मोदते पतिमच्युतम् ॥११६॥
अन्तःपुर–निवासिन्यो गोप्यश्चायुतसंख्यकाः ।
पद्महस्ताश्च ताः सर्वाः कोटि वैश्वानरप्रभाः ॥११७॥

आपके श्रोणि मण्डल मणि किङ्किणी अलङ्कारों से शोभित है।१११।

आप गोविन्द नेत्र सुखदा है, गोपी चूड़ाग्रमालिका, कृष्णप्रिया अरविन्दाक्षी, विहारामृत दीर्घिका है।११२।

श्रीअङ्ग अनुराग सुधासिन्धु के हिलोर से सदा आन्दोलित हैं, आप कुमारी, कृष्ण दयिता, कृष्ण कृष्णाङ्ग भूषिता हैं।११३।

दिव्य अङ्ग में पादाग्रपर्यन्त मनोरम वसनाञ्चल शोभित है। आप रासोत्सवावेशिनी, कृष्णनीत रहः स्थली है। ११४।

आप गुण रूपिणी प्रकृति की उपास्या है, नित्या, सत्या, गुणातीता एवं सर्वप्रलय वर्जिता हैं, ।११५।

सर्बुद चन्द्रके समान धवल रम्य चामरव्यजन से सर्वलक्षण सम्पन्ना आप पति अच्युत के आनन्द विधान करती हैं, ।११६॥

अयुत संख्यक गोपियां अन्तः पुर निवासिनी हैं, वे सब पद्म हस्ता कोटि वैश्वानर को भाँति कान्ति युक्ता हैं, ।११७।

नानालक्षणसंयुक्ताः शीतांशुसदृशाननाः ।
ताभिः परिवृतः कृष्णः शुशुभे परमः पुमान् ॥११८॥
तस्याग्रेभगवान् राम आसीनः सुमहासने ।
नित्य यौवन संयुक्तो नयनानन्दविग्रहः ॥११९॥
अपाङ्गेङ्गितसंयुक्तो रम्यवक्त्रारुणेक्षणः ।
कोटि कोटीन्दुसङ्काश–लावण्यामृत सागरः ॥१२०॥
नीलकुन्तल संसक्त-वामगण्ड–विभूषितः ।
सुस्निग्धनील कुन्तलनील वस्त्रोपशोभितः ॥१२१॥
नीलरत्नाद्यलङ्कार सेव्यमानस्तनुश्रिया ।
विस्रस्त नीलवसन रसना विलसत् कटिः ॥१२२॥
नीलमञ्जीर संसक्त सुपदद्वन्दराजितः ।
कोटि चन्द्र प्रतीकाशनखमण्डलमण्डितः ॥१२३॥

अनेक लक्षण संयुक्ता, शीतांशु सदृशाननः गोपियों से परिवृत परम पुरुष श्रीकृष्ण अतिशय शोभित होते हैं ।११८।।

श्रीकृष्ण के अग्रभागमें सुमहासनमें भगवान् बलराम उपविष्ट हैं । आप नित्य यौवन संयुक्त नयनानन्द विग्रह हैं ॥११९।

अपाङ्ग वीक्षण युक्त रम्य वदन कमल अनुराग पूर्ण भङ्गी से शोभित है, कोटि कोटि इन्दु के समान कान्ति एव लावण्यामृत का सागर स्वरूप हैं ।१२०।

आपका वामगण्ड नील कुन्तल के सम्पर्क से अतिशय भूषित हैं । सुस्निग्धनील कुन्तल एव परिधेय नील वसनसे सुशोभितहै ।१२१

तनुकान्ति के द्वारा नील रत्नादि अलंकारो को शोभित करती हैं । नील बसन, एवं रसना के द्वारा कटि देश सुशोभित हैं ।१२२।

मनोरम चरण कमल नील मञ्जीरों से शोभित है । उस में नख

रेवत्याद्यनुचर्यश्चशतसंख्यास्तु योषितः ।
ताभिः परिवृतो रामः शुशुभे परमः पुमान् ॥१२४॥
यथा कृष्ण स्तथारामः सुवाहुःसुवलोऽपिच ।
श्रीदामा वसुदामाच सुदामा च महावलः ॥१२५॥
लवङ्गश्च महावाहुः स्तोककृष्णोऽ र्ज्जुनस्तथा ।
अंशुको वृषभश्चैव वृषलोजयमालवः ॥१२६॥
ऊर्ज्जस्वी च शुभप्रस्थो विनोदी च वरुथपः ।
रसिकश्च मदान्धश्च महेन्द्रश्चन्द्रशेखरः ॥१२७॥
रसालश्च रसान्धश्च रसाङ्गश्च महावलः ।
सुरङ्गो जयरङ्गश्च रङ्गश्चानन्द कन्दरः ।१२८।
नन्द सुनन्द आनन्दश्चचञ्चलश्चपलोबलः ।
श्यामलो विमलो लोलः कमलः कमलेक्षणः ॥१२९॥

मण्डल कोटि चन्द्र के समान सुशोभित है, ॥१२३॥

रेवती प्रभृति अनुचरी असंख्य नारियों से परिवृत परम पुमान् राम अतिशय शोभित हैं ।१२४॥

जैसे कृष्ण हैं, राम भी वैसे हैं, और उनके सहचर भी वैसे ही हैं । उन सवका नाम इस प्रकारहै । सुवाहु सुवल, श्रीदामा, वसुदामा महावल ॥१२५॥

लवङ्ग, महावाहु, स्तोक कृष्ण, अर्जुन, अंशुक, वृषभ, वृषल, जय मालव, ।१२६।

उर्ज्जस्वी, शुभप्रस्थो विनोदी, वरुथप, रसिक, मदान्ध, महेन्द्र चन्द्रशेखर ।१२७।

रसाल रसान्ध, रसाङ्ग, महावल, सुरङ्ग, जयरङ्ग, रङ्ग, आनन्दकन्दर ॥१२८॥

नन्द, सुनन्द, आनन्द चञ्चल, कमल, बल, श्यामल, विमल,

मधुरश्च रसान्धश्च माधवश्चन्द्रवान्धवः
सुरथश्च महानन्दो गन्धर्वश्चन्द्रवान्धवः ॥१३०॥
कन्दर्प केलिदर्पश्च रन्सेद्रः सुन्दरो जयः ।
महेन्द्रश्च सुगन्धर्वः सरसेन्द्रः कलालयः ॥१३१॥
सुमुखो यशसीन्द्रश्च सानन्दश्चन्द्र भावनः ।
रसभृङ्गो रसालाङ्गो विलासः केलिकाननः ॥१३२॥
अनन्तः केलिवान् कामः प्रेमभृङ्गः कलानिधिः ।
सवलोनागरः श्यामः सुकामः सरसो विधिः ॥१३३॥
गौराङ्गः स्तोकगोविन्दो देवेन्द्रश्चन्द्रमालयः ।
श्यामाङ्गः परमानन्दो रसाङ्गश्चन्द्रयादवः ॥१३४॥
कृष्णाङ्गः स्तोकदामाच विभङ्गो रसमानवः ।
प्रेमाङ्गः स्तोक वाहुश्च हेमाङ्गो जययादवः ॥१३५॥

लोल, कमल, कमलेक्षण ॥१२९॥

मधुर, रसान्ध, माधव, चन्द्रमाधव, सुरथ, महानन्द गन्धर्व श्चन्द्र वान्धव ॥१३०॥

कन्दर्प, केलिदर्प, रसेन्द्र, सुन्दर, जय, महेन्द्र सुगन्धर्व सरसेन्द्र, कलालय ॥१३१॥

सुमुख यशसीन्द्र, सानन्द चन्द्रभावन, रसभृङ्ग, रसालाङ्ग, विलास, केलिकानन ।१३२।

अनन्त, केलिवान्, काम, प्रेमभृङ्ग, कलानिधि सवल, नागर, श्याम, सुकाम, सरस, विधि ।१३३

गौराङ्ग, स्तोकगोविन्द, देवेन्द्र चन्दमालय, श्यामाङ्गः परमानन्द, रसाङ्ग चन्द्रयादव ॥१३४॥ कृष्णाङ्गः स्तोकदामा विभङ्ग रसमानव, प्रेमाङ्ग, स्तोक, वाहुहेमाङ्ग, जय यादव ॥१३५॥ रक्ताङ्ग,

रक्ताङ्गः स्तोकदामा च त्रिभङ्गश्च सुनागरः
पवनेन्द्रः सुरेन्द्रश्च सुरथेन्द्रोजयद् व्रतः ॥१३६॥
सुखदो मोहनो दामा केलिदामा सुमन्मथः ।
सुचन्द्रश्चन्द्रमानिन्द्रो विजयोजयशेखरः ।१३७।
उपेन्द्रः स्तोकदामा व सुजयः स्तोकनागर ।
वसन्तश्च सुमन्तश्च रसवान् रसकन्दरः ॥१३८॥
कामेन्द्रः कामवान् कामोजितेन्द्रश्चन्द्र चञ्चलः ।
दम्भः सुदम्भो दाम्भिकः परदम्भो विदम्भकः ॥१३९
प्रेमदम्भः सुगन्धिश्च सुदम्भोदम्भनायकः ।
उपनन्दश्चारुनन्दो रसानन्दो विलोचनः ॥१४०॥
जयनन्दः प्रेमनन्दो दर्पनन्दः सुमोहनः ।
भद्रनन्दश्चन्द्रनन्दो वीरनन्द सुधाकरः ॥१४१॥
बलनन्दो वाहुनन्दः स्तोकनन्दो यशस्करः
उपनन्दो कृष्णनन्दो गौरनन्दोविशारदः ।१४२।
श्यामनन्दो दामनन्दः सुखनन्दः प्रियम्बदः ।

स्तोकदामा त्रिभङ्ग सुनागर, पवनेन्द्र सुरेन्द्र सुरथेन्द्र, जयद्व्रत ।१३६ सुखद, मोहन दामा, केलिदामा, सुमन्मथ । सुचन्द्र, चन्द्रमान् इन्द्र, विजय जयशेखर ॥१३७॥ उपेन्द्र, स्तोक दामा,, सुजय, स्तोक नागर, वसन्त, समन्त रसवान् रसकन्दर ॥१३८॥

कामेन्द्र, कामवान् काम, जितेन्द्र, चन्दचञ्चल, दम्भ, सुदम्भ, दाम्भिक, परदम्भ, विदम्भक ॥१३९॥ प्रेम दम्भ, सुगन्धि, सुदम्भ दम्भ नायक, उपनन्द, चारुनन्द, रसानन्द विलोचन, ॥१४०॥ जयनन्द प्रेम नन्द दर्पनन्द सुमोहन । भद्रनन्द चन्द्रनन्द्र वीरनन्द सुधाकर ॥१४१॥ बलनन्द, वाहुनन्द स्तोकनन्द यशस्कर । उपनन्द कृष्णनन्द गौरनन्द

उपकृष्णः कलाकृष्णः वाहुकृष्णः सुखाकरः ।१४३।।
उपसामा रसस्तोकः प्रेमदामाजयप्रदः ।
मधुकण्ठो विकुण्ठश्च सुधाकण्ठः प्रियव्रतः ।१४४।
रसकण्ठश्च वैकुण्ठः सुकन्दश्चन्द्र सुन्दरः ।
केलि कण्ठः प्रेमकण्ठो वरकण्ठो रसम्बदः ।१४५।
जयकण्ठ कलाकण्ठोऽमृत कण्ठः कलाकरः ।
नृत्यकेन्द्रो नृत्यशक्तो नृत्यमान नृत्यशेखरः ।।१४६।।
नृत्यरङ्गो नृत्यतुङ्गो नृत्यानन्दः सुयोधनः ।
रसचन्द्रः कामचन्द्रो रूपचन्द्रो विमोहनः ।१४७।
केलिचन्द्रः केलिदर्पः सदर्पो दर्पनागरः ।
प्रेमेन्द्रः प्रेमचन्द्रश्च प्रेमरङ्गाद्य स्तथा ।।१४८
अयुता युतगोपालो रामकेशवयोः सखा ।
तेषां रूपं स्वरूपञ्च गुणकर्मादयोऽपिच ।।१४६।।
नहि वर्णयितुं शक्यः कल्प कोटिशतैरपि ।

विशारद ।।१४२।। श्यामनन्द, दामनन्द, सुखनन्द प्रियम्वद, उपकृष्ण कलाकृष्ण वाहुकृष्ण सुखाकर ।।१४३।। उपसामा रसस्तोक प्रेमदामा जयप्रद, मधुकण्ठ विकुण्ठ सुधाकण्ठ प्रियव्रत ।।१४४।। रसकण्ठ वैकुण्ठ सुकन्द चन्द्रसुन्दर केलिकण्ठ प्रेमकण्ठ वरकण्ठ रसम्बद ।।१४५।। जय कण्ठ कलाकण्ठ अमृतकण्ठ कलाकर नृत्यकेन्द्र नृत्यशक्त नृत्यमान् नृत्य शेखर ।।१४६।। नृत्यरङ्ग नृत्यतुङ्ग नृत्यानन्द सुयोधन रसचन्द्र काम चन्द्र रूपचन्द्र विमोहन ।।१४७।। केलिचन्द्र केलिदर्प सुदर्प दर्पनागर प्रेमेन्द्र प्रेमचन्द्र प्रेमरङ्गा प्रभृति ।।१४८।। अयुत अयुत गोपाल राम केशवके सखा हैं। उनके रूप स्वरूप गुण कर्म प्रभृति का ।।१४६।।

चन्द्रमण्डलसंकाश सुस्मितानन पङ्कजः ।१५०।
कृष्ण प्रेमरसामोदमदाघूर्णितलोचनः ।
सदानृत्यरसाह्लाद पुलकप्रेम विह्वलः ।।१५१।।
सुन्दरो नागरो गौरः सुवाहुः स प्रकीर्त्तितः ।।१५२।।
गौराङ्गो नादगम्भीरो महादम्भ समन्वित ।
रासभावः सदामोदः परमानन्दकन्दरः ।।१५३।।
कन्दर्पकोटिसौन्दर्यो नृत्य लीलाविशारदः
सदाप्रेमरसाह्लादः सुबलःपरिकीर्त्तितः ।१५४।
महारङ्ग रसोल्लास-रक्तोत्पल समप्रभः ।
पुलक स्वेद संयुक्तो रति लेखाविशारदः ।१५५।।
गायको नर्त्तकश्चैव माल्यश्चन्दन जीवनः
ईषदारक्त गौराङ्ग श्रीदामा स प्रकीर्त्तितः ।।१५६।।
सदानन्द रसोल्लासः श्यामसुन्दरविग्रहः

वर्णन करने में शत कोटि कल्प में भी कोई समर्थ नहीं है। चन्द्रमण्डल के समान सुस्मित आनन पङ्कज, कृष्ण प्रेमरस के आमोद मद से आघूर्णित लोचन, सदानृत्यरसाह्लाद से पुलकायित वपु एवं अन्तः करण प्रेमविह्वल सुन्दर, नागर, गौर सुवाहु को जानना होगा ।।१५० ।।१५२।। गौराङ्ग, नादगंभीर, महादम्भ समन्वित रसभाव सदामोद परमानन्द कन्दर है ।।१५३।। कन्दर्प कोटिसौन्दर्य नृत्यलीला विशारद सदाप्रेम रसाह्लाद सुवल है ।। ५४।।

महारङ्ग रसोल्लास रक्तोत्पलके समान कान्ति पुलक स्वेद संयुक्त रति लेख में विशारद ।।१५५।।

गायक, नर्त्तक माल्य चन्दन जीवन, ईषद् आरक्त गौराङ्ग श्रीदामा है ।।१५६।।

गायको नर्त्तक श्चैव महानन्दैकसागरः ।१५७॥

रमणीनां पराधीनः दृगञ्चल–मनोहरः ।

पुलक प्रेमसंयुक्तो वसुदामा प्रकीर्त्तितः ।१५८

रसिको नागरो गौरः शरदम्बुरुहेक्षणः

अग्रन्थि सरल स्थूल उन्मादनृत्यसुन्दरः ।१५९।

महारास रसाह्लाद पुलको प्रेमविह्वलः ।

नानारङ्ग रसोपेतः सुदामा स प्रकीर्त्तितः ।१६०।

नवीन नीरदश्यामो वेणुनोत्पुलकावलिः ।

कृष्णानन्द रसोन्माद विह्वलो नृत्य चञ्चलः ।१६१।

सदारति-रसामोद–नाना रङ्गैक कन्दरः ।

नाति दीर्घो न खर्वश्च महावलः प्रकीर्त्तितः ।१६२।

अनङ्गवृन्द सौन्दर्य्य-नानामृत रसायनः ।

महाशान्तो महादान्तो मधुराकृति सुन्दरः ।१६३।

सदानन्द रसोल्लास श्यामसुन्दर विग्रह गायक नर्त्तक महानन्द का सागर स्वरूप ॥१५७॥ रमणियों के अधीन मनोहर नयनाञ्चल, पुलक प्रेम संयुक्त वसुदामा है ॥१५८॥

रसिक नागर गौर शरदम्वुरुहेक्षण, अग्रन्थि सरल स्थूल उन्माद नृत्य सुन्दर ॥१५९॥ महारास रसाह्लाद पुलकप्रेम विह्वल, नानारङ्ग रस युक्त सुदामा है ॥१६०॥

नवीन नीरदश्याम, वेणु ध्वनि श्रवण से पुलकायित वपु, कृष्णानन्द रसोन्माद विह्वल नृत्य चञ्चल । १६१

सदारति रसामोद नानारङ्गों के भान्डार स्वरूप नाति दीर्घ अति खर्व भी नहीं, महावल है ॥१६२॥

अनङ्ग, वृन्द सौन्दर्य, नाना अमृत रसायन, महाशान्त, महा

गोविन्द दर्शनाह्लाद–वेणुगान विशारदः ।

भ्रूभङ्गकामकोदण्डो लवङ्गः स प्रकीर्त्तितः ।१६४।

सदानन्द मनोन्माद रसामोदैक–कन्दरः ।

महाबलभव श्रीमान् पुलकावलिविग्रहः ।१६५।

सुदीर्घः सुन्दरो गौरो महाप्रेमरसाकुलः ।

सदाप्रेमी रसाह्लादो महावाहुः प्रकीर्त्तितः ।१६६।

प्रफुल्ल पुण्डरीकाक्षो मन्द हास्यारुणोदयः ।

कृष्णानन्द रसामोद उन्माद नृत्य सुन्दरः ।१६७।

पुलक प्रेम–संयुक्तो मात्सर्य्यादि निवारितः ।

चिरवास रसाह्लादः स्तोक कृष्णः प्रकीर्त्तितः ।१६८।

कृष्णप्रेम रसाह्लाद विह्वलो नृत्य चञ्चलः ।

अरुणेन्दीवरश्रेणीदलनिन्दितलोचनः ॥१६९॥

चारुचन्दनलिप्ताङ्गो बनमाला-विभूषितः

सदारासरसासक्तोऽर्ज्जुनः स परिकीर्त्तितः ।१७०।

दान्त, मधुराकृति सुन्दर, ॥१६३॥ गोविन्द दर्शन से आनन्दित चित्त, वेणुगान विशारद भ्रूभङ्ग कामकोदण्ड लवङ्ग का स्वरूप है ॥१६४॥

सदानन्द मदोन्मादरसामोद के कन्दर महावल युक्त श्रीमान् पुलकावलिशोभित देह ॥१६५॥ सुदीर्घ सुन्दर, गौर महाप्रेम रसाकुल सदा प्रेमी रसाह्लाद महा वाहुकास्वरूप है ॥१६६॥

प्रफुल्ल पुण्डरीकाक्ष स्मित हास्य अनुराग पूर्ण प्रयत्न, कृष्णा–नन्द रसामोद उन्माद -नृत्य सुन्दर ॥१६७॥ पुलक प्रेम संयुक्त मात्–सर्य्यादि रहित, सहचर आनन्दित स्तोककृष्ण का स्वरूप है ॥१६८॥

कृष्ण प्रेम रसास्वाद में विह्वल नृत्य चञ्चल अरुण इन्दीवर श्रेणी–दल निन्दित लोचन, ॥१६९॥

सुदीर्घः सुन्दरो गौरो महाप्रेम रसाकुलः।
नृत्य रङ्गसमायुक्तो अंशुकः स प्रकीर्त्तितः।१७१॥
कृष्ण प्रेम रसोन्मादः कृष्णवर्णं कलेवरः।
वेणुगानमदामोदः वृषभः स प्रकीर्त्तितः।१७२।
नृत्यगीत समोपेतस्तप्तकाञ्चन विग्रहः।
प्रेमवारि समाकीर्णो मालवः स प्रकीर्त्तितः॥१७३।
सदा प्रेम रसोल्लासः श्याम सुन्दर विग्रहः।
गायकोनर्त्तकश्चैव वृषलः स प्रकीर्त्तितः।१७४।
सदाप्रेम रसामोदमदमुद्रित लोचनः।
कृष्णेतिनाद गम्भीर ऊर्ज्जस्वी स प्रकीर्त्तितः।१७५।
कृष्ण प्रेम रसोन्मत्तः कृष्णहुंकृति विह्वलः
पुलकावलि संसक्तः शुभप्रस्थः प्रकीर्त्तितः।१७६।

चारु चन्दन लिप्त देह, वनमाला-विभुषित, सदारास रसासक्त अर्ज्जुन है॥१७०॥

सुदीर्घ सुन्दर,गौर महाप्रेम रसाकुल, नृत्यरङ्ग समायुक्त अंशुक का स्वरूप है॥१७१।

कृष्णप्रेम रसोन्माद, कृष्णवर्णकलेवर वेणुगान मदसे आनन्दित वृषभ है।१७२।

नृत्यगीत युक्त, तप्त काञ्चन के समान विग्रह है, प्रेम वारि से आप्लुत मालव है।१७३। सदा प्रेम रसोल्लास, श्यामसुन्दर विग्रह, गायक—व नर्त्तक वृषल है॥१७४। सदा प्रेम रसामोद मदसे मुद्रित लोचन कृष्णनाम लेकर गम्भीर नाद परायण उर्ज्जस्वी है।१७५।

कृष्ण प्रेमरसोन्मत्त कृष्ण हूंकार से विह्वल पुलकावलि युक्त शुभप्रस्थ है।१७६।

कृष्ण प्रेममदोन्मादः प्रेमवारि समन्वितः
वैवर्ण्य वलिताकारो विनोदी स प्रकीर्त्तितः १७७
गोविन्द दर्शनामोद-मद मुद्रित लोचनः
पुलकाकीर्ण-गौराङ्गो वरूथपः प्रकीर्त्तितः।१७८।
रसिकश्च मदान्धश्च प्रेमरङ्गादयस्तथा।
अगम्य महिमानस्त सर्वे कृष्ण समोपमाः।१७९।
गोप्यश्च वहवः सन्ति वृन्दावन विहारिणः।
कृष्णस्य रमणीनाञ्च नामानुकीर्त्तनं शृणुः।१८०
राधा तिलोत्तमा पुष्पा शशिरेखा प्रियम्बदा।
मानसा माधवीश्यामा चन्द्ररेखा च शारदा।१८१
चित्ररेखा मधुमती चन्द्रा मदनसुन्दरी।
विशाखा च प्रिया चन्द्रा चातिचन्द्रा सुनागरी॥१८२
सुन्दरी प्रेमदा माया कामिनी चन्द्रसुन्दरी।
भवानी भाविनी देवी चन्द्र कान्तिश्च नागरी॥१८३॥

कृष्ण प्रेममदोन्माद प्रेमवारि समन्वित वैवर्ण्यवलित आकर विनोदी है।१७७। गोविन्द दर्शनामोद मदमुद्रित लोचन पुलकों से शोभित गौराङ्ग वरुथप है॥१७८॥ रसिक, मदान्ध, प्रेम रङ्ग प्रभृति की महिमा अगम्य हे और सव कृष्ण के ही समान है।१७९।

सम्प्रति वृन्दावन विहारी कृष्ण की रमणीयों के नाम सुनो, वे सव संख्या में अनेक हैं।१८००।

राधा, तिलोत्तमा पुष्पा शशिरेखा, प्रियम्वदा, मानसा माधवी श्यामा,चन्द्ररेखा शारदा।१८१। चित्ररेखा मधुमती,चन्द्रा मदन सुन्दरी, विशाखा प्रियचन्द्रा अति चन्द्रा सुनागरी।१८२। सुन्दरीप्रेमदा माया, कामिनी चन्द्रसुन्दरी भवानी भागिनी देवी चन्द्रकान्ति भागरी।१८३।

रसदा जयदा प्रेमा विजया च मनोहरा ।
वल्लभा वैष्णवी कृष्णा चपला चन्द्रचञ्चला ॥१८४॥
गौराङ्गी रङ्गिणी गौरी रसाङ्गी केलिचञ्चला ।
रसचन्द्रा केलिचन्द्रा कामचन्द्रमहावला ॥१८५॥
रसान्धा च मदान्धा च प्रेमान्धा चन्द्रकामिनी ।
विसदर्पा रासदर्पा प्रेमदर्पा विभाविनी ॥१८६॥
नासदर्पा वेशदर्पा लासदर्पा बिलासिनी ।
केलिकण्ठा चारुकण्ठामृतकण्ठा रसायनी ॥१८७॥
कमला चञ्चला लीला केलिलीला कलावती ।
रस लोला रास लीला प्रेमलीला सरस्वती ॥१८८॥
नृत्यभद्रा नृत्यचन्द्रा नृत्यकी नृत्यसेवकी ।
चन्द्राकला चन्द्रलीला चन्द्रावती सुरेश्वरी ॥१८९॥
इन्दुवती कलाकान्तिर्भारती कृष्णवल्लभा ।
नृत्यकला नृत्यलीला जयलीला सुदुर्ल्लभा ॥१९०॥

रसदा जयदा, प्रेमा विजया मनोहरा, वल्लभा, वैष्णवी कृष्णा चपलाचन्द्र चञ्चला ।१८४। गौराङ्गी रङ्गिणी गौरी रसाङ्गी केलि चञ्चला रस चन्द्रा केलि चन्द्रा काम चन्द्रामहावला ।१८५। रसान्धा मदान्धा प्रेमान्धा चन्द्र कामिनी विसदर्पा रासदर्पा प्रेमदर्पा विभाविन ।१८६। नासदर्पा वेशदर्पा लासदर्पा विलासिनी, केलि कण्ठा चारुकण्ठा अमृतकण्ठा रसायनी ।१८७। कमलाचञ्चलालीला केलिलीला कलावती रसलीला रासलीला प्रेमलीला सरस्वती ॥१८८। नृत्यभद्रा नृत्यचन्द्रा नृत्यकी नृत्यसेवकी चन्द्रकला चन्द्रलीला चन्द्रावती सुरेश्वरी ।१८९ इन्दुवती कला कान्ति भारती कृष्ण वल्लभा नृत्यकला नृत्यलीला जयलीला सुदर्ल्लभा ।१९०। रूपचन्द्रा विदम्भा केलिदण्डा मधुव्रता

रूपचन्द्रा विदम्भा च केलिदण्डा मधुव्रता ।
मधुकण्ठा सुकण्ठा च प्रेमकण्ठा प्रियव्रता ॥१९१
लोककण्ठा च विकुण्ठा रस कण्ठा जयव्रता ।
अखिला सुखदा वृन्दा कालिन्दी केलिलालिता ।१९२।
सुकेलि चञ्चलानन्तापावनी सर्वमङ्गला ।
शान्ता सुकान्ता कान्ताच प्रेमदा श्यामसुन्दरी ॥१९३
पद्मिनी मालिनी वाणी सर्वेशा शक्तिरुत्तमा ।
रसाला सुमुखी चैव सानन्दानन्ददायिनी ॥१९४॥
रसवृन्दा केलिवृन्दा प्रेमवृन्दा सुरञ्जनी ।
प्रेमवृन्दा मुकुन्दा च रसवृन्दा रसोत्तमा ॥१९५॥
केलिभद्रा कलाभद्रा रासभद्रा मनोरमा ।
लासभद्रा वेशभद्रा प्रेमभद्रा रसाञ्चला ॥१९६॥
रूपकला रूपमाला चन्द्रमाला रसावली ।
कुमारी मालती भक्तिः सानन्दानन्दमञ्जरी ॥१९७

मधुकण्ठा सुकण्ठा प्रेमकण्ठा प्रियव्रता ॥ १९१ ॥ लोककण्ठा वैकुण्ठा रसकण्ठा जयधृता अखिला सुखदा वृन्दा कालिन्दी केलि लालिता ॥१९२। सुकेलि चञ्चला अनन्ता पावनी सर्वमङ्गला शान्ता सुकान्ता कान्ता प्रेमदा श्याम सुन्दरी ॥१९३॥

पद्मिनी मालिनी वाणी सर्वेशा शक्तिरुत्तमा । रसाला सुमुखी सानन्दानन्द दायिनी ।१९४। रस वृन्दा केलिवृन्दा प्रेमवृन्दा सुरञ्जनी प्रेमवृन्दा मुकुन्दा-रसवृन्दा रसोत्तमा ।१९५। केलिभद्रा कलाभद्रा रास भद्रा मनोरमा, लासभद्रावेशभद्रा प्रेमभद्रा रसाञ्चला ।१९६।

रूपकला रूपमाला चन्द्रमाला रसावती कुमारी मालतीभक्ति सानन्दानन्द मञ्जरी ।१९७॥ कृष्ण–प्रेममदा, भङ्गी त्रिभङ्गी रस

कृष्ण प्रेममदा भङ्गी त्रिभङ्गी रसमञ्जरी ।
प्रेमकला कामकला केशवा रासवल्लभा ॥१९८॥
चन्द्रमुखी महागौरी सुमुखी कृष्णमङ्गला
गन्धर्वाकेलिगन्धर्वा सुदर्पादर्पहारिणी ॥
तुलसी मथुरा काशी प्रेयसी प्रेमकामिनी ॥१९९॥

श्रीभगवानुवाच—

प्रेमभङ्गीति भगवान् महाविष्णुः सनातनः ।
नाशक्नोत् कीर्त्तितुं ब्रह्मन् पपात धरणीतले ॥२००॥
प्रेमाश्रुलोचनो भूत्वा आसीद्युग सहस्रशः ।
महानन्दरसायुक्तः पुलकावलि विग्रहः ॥२०१॥
इति सर्वं समालोक्य ईश्वरस्य विचेष्टितम् ।
अन्योन्यमुखमालोक्य सङ्गीतं कृष्णमङ्गलम् ॥२०२॥
ततो मम प्रबोधार्थं भगवानादिपूरुषः ।
रत्नपर्यङ्कमारुह्य रहस्यं कथ्यतेरहः ॥२०३॥

मञ्जरी प्रेमकला कामकला केशवा रास वल्लभा १९८

चन्द्रामुखी महागौरी सुमुखी कृष्णमङ्गला गन्धर्वा केलिगन्धर्वा सुदर्पा दर्पहारिणी, तुलसी मथुरा काशी प्रेयसी प्रेमकामिनी ।१९९।

श्रीभगवान वोले—

हे ब्रह्मन् ! भगवान् सनातन महाविष्णु प्रेम परिपाटि का वर्णन करनेमें असमर्थ रहे और धरणीपर गिरपड़े ।२००।

सहस्र युग पर्यन्त महानन्दरसयुक, पुलकावलि विग्रह, प्रेमाश्रु लोचन होकर रहे ।२०१।

इस प्रकार ईश्वर की समस्त लीलाओं को देखकर अन्योऽन्य के मुख को देख कर कृष्णमङ्गल का गान किये ॥२०२॥

अनन्तर भगवान् आदिपुरुष मुझे जगानेके लिए रत्न पर्य्यङ्क

ध्वने रन्तर्गतं ज्योति र्ज्योतिरन्तर्गतंमनः ।
तन्मनो विलयं याति तद्विष्णोः परमं पदम् ॥२०४॥
तस्मात् कोटिगुणं रम्यं वृन्दावनसुखं विदुः ।
तस्मात् कोटिगुणं प्रोक्तं ममेदमिदं शाश्वतम् ॥२०५॥
तस्मात् कोटि गुणं रम्यं तस्या विलासिनाम् ।
तस्मात् कोटिगुणं गोपी-गोपालानां सुखं विदुः ॥२०६॥
तस्मात् किं कथयिष्यामि कृष्णस्य सुखमीदृशम् ।
यस्यैकसुखलेशेन पूर्णो गोलोकमण्डलः ।२०७।
यत् सुखात् परमानन्द महावैकुण्ठ कोटिशः ।
यत् सुखात् सच्चिदानन्द श्वेतद्वीप निवासिनः ॥२०८॥
यत् सुखाद्वै चिदानन्दानन्तवैकुण्ठ—वासिनः ।

में आरोहण करके एकान्त में गोपनीय तत्थ्य कहे थे ।२०३।

ध्वनि के अन्तर्गत ज्योति हैं, और ज्योति के अन्तर्गत मन है, वह मन भी जहाँ पर विलय को प्राप्त होता है, वह ही श्रीविष्णु का परम पद है, ।२०४।

उस से कोटिगुण रम्य वृन्दावन सुख है, विद्वान् गण इसे जानते हैं, उस से भी कोटि गुण कहा गया है, शाश्वत मेरापन ।२०५।

उस से भी कोटि गुण अधिक है, उनकी विलासिनीयों के रम्य सुख,, उस से भी गोपी गोपालोंके सुख अधिक है ।२०६।

इसलिए श्रीकृष्ण के ऐसे सुख को मैं कैसे कहूँ,, जिस के एक सुखलेश के द्वारा गोलोक मण्डल पूर्ण है ।२०७।

जिनके सुख से ही कोटि कोटि महा वैकुण्ठ परमानन्दित होते हैं, जिनके सुख से सच्चिदानन्द श्वेतद्वीप निवासियों का भी आनन्दहै।।

जिनके सुख से ही चिदानन्द अनन्त वैकुण्ठ वासियों का भी

यस्य पाद नख ज्योत्स्ना परंब्रह्मेति शब्दितम् ।।
तस्मात् किं कथयिष्यामि कृष्णस्य सुखमीदृशम् ।।२०९

श्रीभगवानुवाच—

कदा पश्यामि हा नाथ श्रीकृष्णं नयनोत्सवम् ।
कदा पश्यामि हा नाथ तस्य धाम मनोहरम् ।।२१०।।

श्रीमहाविष्णु रुवाच—

एकदा द्वापरस्यान्ते कृष्णः सर्वेश्वरेश्वरः ।
श्रुतीनां वरदानार्थंभाविर्माबो भविष्यति ।।२११।।

ब्रह्मोवाच—

एतत्ते कथितं देव भगवान् हरिरीश्वरः ।
अमुष्य द्वापरस्यान्ते कृष्णस्तुगोचरोभवेत् ।।२१२।।
परमुपनिषदर्थं गोप्यमात्यन्तिकं ते

आनन्द है, जिनकी पादनख ज्योत्स्ना को ही पर ब्रह्म कहा जाता है। अतएव श्रीकृष्ण के सुख का प्रकार मैं कैसे कहूँ ।२०९।।

श्रीभगवान् बोले—

हा नाथ ! कब मैं नयनोत्सव श्रीकृष्ण को दर्शन करूँगा हा नाथ ! कब मैं उनका मनोहर धाम का दर्शन करूँगा ।२१०।

श्रीमहाविष्णुने कहा—

एक समय द्वापर के अन्तभागमें सर्वेश्वरेश्वर श्रीकृष्ण श्रुतियों को वरदानार्थ आविर्भूत होंगे ।२११।

ब्रह्माजीने कहा—

हे देव ! भगवान् ईश्वर हरि का विवरण मैंने कहा । समीप वर्त्ती द्वापर के अन्त में कृष्ण लोक नयन गोचरी भूत होंगे ।।२१२।।

एकान्त रूप से मननात्मक उपासना के लिए आत्यन्तिक एक

निगदित मिदमेकं प्राणनाथात्मनोऽपि
न खलु न खलु तस्मै भक्तिहीनाय वाच्यं ।
व्रजपुरवनितानां वल्लभः कृष्णचन्द्रः ।।२१३।।

इति श्रीगोविन्द वृन्दावने ब्रह्मशिव संवादे प्रथमपटलः ।।

❊ श्रीश्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ❊

श्रीबलरामउवाच—

ततः किमभवत् पश्चात्त्रिभङ्गत्वं गतेत्वयि ।
तन्मे कथय गोविन्द ! यदितेऽस्ति दयामयि ।।१।।

श्रीकृष्ण उवाच—

तत् प्रेमारक्तचित्तस्था स्पृहा तस्यांममाभवत् ।
तच्चित्ताकर्षणार्थञ्च चिन्तयित्वा पुनः पुनः ।।२।।
मन्त्ररूपः स्वयमहमभवं मोहनाकृतिः ।

मात्र गोपनीय प्राणनाथ का विवरण तुम्हें कहा । भक्ति हीन किसी भी व्यक्ति को इस विषय को न कहना न कहना । श्रीकृष्ण चन्द्र व्रज पुर वनिताओं का वल्लभ हैं । २१३।

इति श्रीश्रीगोविन्द वृन्दावने ब्रह्म शिव संसादे प्रथमपटलः ।।

❊ श्रीश्रीराधा कृष्णाभ्यां नमः ❊

श्रीबलरामने कहा—

जब तुम त्रिभङ्ग रूप होगये तब क्या हुआ, हे गोविन्द ! मेरे प्रति यदि दया हो तो, वे सब विवरण कहो ।१।

श्रीकृष्णने कहा—

उस के प्रेम से आसक्त चित्त होकर उस के प्रति मेरी स्पृहा हुई । उस को आकर्षण करने के लिए पुनः पुनः चिन्ता की ।२।

निजांशे प्रकृतिर्वंशी ह्यंशे वृन्दावनक्षितिः ॥३॥
ब्रह्मांशमेकतानीतमेकं ब्रह्माक्षरं परम् ।
तदेव हि तत् प्रकृतिः प्रकृतिस्तत् परं पदम् ॥४॥
ध्यात्वा तस्य पररूपं जजाप मनुमुत्तमम् ।
मनुना तेन जप्तेन कामः समभवत्ततः ॥५॥
तेनैव मोहिता देवीमम वश्याभवत्तदा ।
सर्वो मे मोहनो मन्त्रः साक्षात् कामकलात्मकः ॥६॥
एषवै प्रकृतिः साक्षादेष वै पुरुषः परः ।
तस्मात् प्रकृतयः सर्वा भवन्ति हि न चापरात् ॥७॥
अस्माद्वै पुरुषाः सर्वे त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
ब्रह्माण्ड कोटि–कोट्यश्च सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥८॥

उस के वाद मोहनाकृति मन्त्ररूप मैं स्वयं ही होगया, निज, अंश से प्रकृति वंशीरूप धारण किया, और अंश से वृन्दावन भूमि भी वनगया ।३।

ब्रह्माशं के साथ एकतापन्न होकर ही परम ब्रह्माक्षर स्वरूप आविर्भूत हुआ, उसकी प्रकृति हीं श्रीकृष्ण है, और वह प्रकृति ही परम पद है ।४।

अक्षर ब्रह्मात्मक का परम् रूप को ध्यानकर उत्तममन्त्र का मैंने जय किया, इस प्रकार मन्त्र जप के कारण काम का आविर्भाव हुआ, और इस से उसी समय देवी मेरी वश्याहो गयी, यह मेरा मन्त्र साक्षात् काम फलात्मक है, और सव का मोहन स्वरूप है ।५।६।

यह ही साक्षात् प्रकृति है, और साक्षात् पर पुरुष भी है । इस से ही समस्त होती है, अपर कोई मूल कारण नहीं हैं ।७।

त्रिलोक में इस मन्त्र से ही समस्त पुरुषों का आविर्भाव होता

मोहनस्तम्मनाकारो मारणोच्चाटने तथा ।
भवत्यत्र न सन्देह स्वयमेवैष मोहनः ॥९॥

श्रीशिव उवाच—

ततस्तां सरसां मत्वा संप्रहृष्ट तनूरुहः ।
तां राधां स्तोतु मारब्धः सर्ववागीश्वरेश्वरः ॥१०॥
शब्द ब्रह्ममयीं वंशीं मूर्च्छयन् स्वरसम्पदा ।
स्वराः सप्तविधा जाताः षड़्जाद्यास्तु ततः क्रमात् ।११
ततो रागाः समभवन् रागिण्यश्च पृथग्विधाः ।
तथा तालगणाश्चैव सप्तग्रामास्तथैव च ॥१२॥
ततो वाद्यास्त्रयश्यैव मूर्च्छनाद्यास्तथैव च ।
ततो भगवती देवी गायत्रीति पदाभवत् ॥१३॥
ततो वेदाश्च चत्वारः श्रुतयश्च ततः पराः

है । कोटि कोटि ब्रह्माण्डभी इसीसे होते हैं, मैं सत्य करके कहता हूँ ।८

यह मन्त्र मोहन और स्तम्भन स्वरूप है, मारण एवं उच्चाटन स्वरूप भी है, इस में कोई सन्देह नहीं है, यह मोहन भी है ।९॥

श्रीशिवने कहा—

तत् पश्चात् आनन्दोत्फुल्लतनु होकर सर्व वागीश्वरेश्वर श्री कृष्ण श्रीराधा को एकमात्र रस स्वरूप जान कर स्तुति करने लगे ।१०

स्वर सम्पद के द्वारा शब्द ब्रह्म मयी वंशी को भरकर वजाने लगे, उस से षड़्जादि सप्तविध स्वर का क्रमसे आविर्भाव हुआ ।११।

उस से पृथक् पृथक् प्रकार के राग रागिणी का आविर्भाव हुआ । तालगण एवं सप्त ग्राम भी इसी से हुए हैं ।१२।

तत् पश्चात् तिन प्रकार वाद्य मूर्च्चना का भी प्रकाट्य हुआ । अनन्तर पद से भगवती देवी गायत्री का आविर्भाव हुआ ।१३।

रागैश्च रागिणीभिश्च तालै र्ग्रामैश्च सप्तभिः ॥१४॥
तथा वाद्यै स्त्रिभि र्नादं मूर्च्छनाभिः समन्ततः ।
गायत्र्याच महादेव्या वेदैश्च श्रुतिभिः सह ॥१५॥
तुष्टाव भगवान् कृष्णः सर्वदेवेश्वरेश्वरः ।
ॐ अनादि रूप चिच्छक्ति परमानन्द रूपिणि ॥
आदि देवार्चिते नित्ये राधिके तं भजस्वमाम् ॥१६॥
इन्दुकोटि समानास्ये इन्दीवर दलेक्षणे ।
ईश्वरीशान-जननि राधिके त्वं भजस्वमाम् ॥१७॥
उत्तमे उज्ज्वलरस प्रिये सोत्कर्षरूपिणि ।
उद्ध्वर्धिो मोहिततनु श्रीविनिर्ज्जित मन्मथे ॥१८॥
ऋतुषट्क सुखामोद युक्ताङ्गे ऽनङ्गवर्द्धिनि ।
अक्षमालाधरे धीरे राधिके त्वं भजस्व माम् ॥१९॥

अनन्तर चार वेद और श्रुतिगण का भी प्रकाट्य हुआ, राग रागिणी ताल सप्तग्राम, तिन प्रकार वाद्यनाद एवं सर्व प्रकार मूर्च्छना चारों वेद, श्रुति महादेवी गायत्री के साथ सर्व देवेश्वरेखर भगवान् कृष्ण श्रीराधिका की स्तुति करने लगे। ॐ अनादि रूप चिच्छक्ति, परमानन्द रूपिणि, आदि देवार्चिते नित्ये हे राधिके! मेरा भजन करो ।१४—१५—१६।

इन्दु कोटि समानास्ये इन्दीवरदलेक्षणे ईश्वरी ईशान जननि ! हे राधिके तुम मुझ का भजन करो ।१७।

उत्तमे ! उज्ज्वल रस प्रिये ! सोत्कर्षरूपिणि ! उद्ध्वर्धिो मोहित तनु श्रीविनिर्ज्जितमन्मथे ।१८। ऋतुषट्क–सुखामोद--युक्ताङ्गे अनङ्गवर्द्धिनि ! अक्षमालाधरे ! धीरे ! हे राधिके ! तुम मेरा भजन करी ॥१९॥

एकानेक स्वरूपासि नित्यानन्द स्वरूपिणि ।
ऐं कारानन्द हृदये राधेकिं मामुपेक्षसे ॥२०॥
ॐमित्येकाक्षरागम्येऽक्षराक्षर परावरे ।
ॐकार-ध्वनि संभूतानन्दरूपे—निरामये ॥२१॥
इन्दुरूपे निरालम्बे परब्रह्म स्वरूपिणि ।
विसर्गरूपेप्रकृतयोनिरूपे भजस्वमाम् ॥२२॥
कमले कामिनी—कान्ते काले कुटिल—कुन्तले ।
कामिनी कामदे वै राधेकिंमामुपेक्षसे ॥२३॥
सुधांशु कोटि संकाशे सुखदुःखविवर्ज्जिते ।
गगनाम्भोजमध्यस्थे त्राहि मां शरणागतम् ॥२४॥
घर्मविन्दुशोभनास्ये चारुघूर्णित लोचने ।
चन्दनागुरुकर्पू रचर्च्चिताङ्गि नमोऽस्तु ते ॥२५॥
छन्दांसि वेदाः श्रुतयो न जानन्ति परं पदम् ।

एक अनेक स्वरूपके हो ! नित्यानन्द स्वरूपिणि ! ऐं कारानन्द हृदये ! हे राधे ! मुझको क्या तुम उपेक्षा करोगी ? ।२०॥

ॐ मित्येकाक्षरागम्ये ! अक्षराक्षर परावरे ! ॐ कार ध्वनि संभूतानन्द रूपे ! निरामये ।२१। इन्दु रूपे ! निरालम्बे ! परब्रह्म स्वरूपिणि ! विसर्गरूपे ! प्रकृति योनि रूपे ! मुझ का भजन करो ॥२२

कमले कामिनी कान्ते ! काले ! कुटिल कुन्तले ! कामिनी कामदे ! राधे ! तुम क्या मुझे उपेक्षा करोगी ।२३॥

सुधांशु कोटि संकाशे ! सुख दुःख विवर्जिते ! गगनाम्भोज मध्यस्थे ! शरणागत हूँ मेरी रक्षा करो ॥२४॥

घर्म विन्दु शोभनास्ये ! चारु घूर्णित लोचने ! चन्दन-अगुरु चर्च्चिताङ्गि ! तुमको मेरा प्रणाम ।२५॥

यस्यास्तस्यै महादेव्यै राधिकायै नमोनमः ॥२६॥
जगद्योनि-स्वरूपासि जगतां जीवनौषधिः ।
दृष्टिं झटिति मे देहि राधिके त्वां नमाम्यहम् ॥२७॥
अट्टाट्टहास संघट्ट-नादोल्लासित मानसे ।
लसत्कृतिचमत्कारश्रृङ्खलारतिविक्रमे ॥२८॥
डिण्डिमानक षड् यन्त्र वेणुवाद्यप्रियप्रिये ।
ढक्कावाद्यानन्दयुक्ते शक्तिकैवल्यदायिनि ॥२९॥
तरुणीतरुणानन्दविग्रहे परमेश्वरि ।
स्थिरानन्दे स्थिरप्रज्ञे स्थिरप्रेमरसप्रदे ॥३०॥
देवादिदेवताराध्यचरणे शरणप्रदे ।
धर्माधर्मप्रदे राधे धर्माधर्मविवर्ज्जिते ॥३१॥

छन्दसमूह वेदगण, श्रुतिगण जिनके चरण को नहीं जानते हैं, उन महादेवी राधिका को वारम्वार मेरा प्रणाम ।२६।

तुम जगत् की उत्पत्ति स्वरूप हो, जगत की जीवनौषधि भी हो ! जल्दी से जल्दी मेरेप्रति दृष्टि दो, मैं तुम को प्रणाम करताहूँ ।२७

अट्ट—अट्ट—हास संघट्ट—नादके द्वारा उल्लसित मानस के हो रति विक्रम की शृङ्खला में सरावोर हो ॥२८॥

डिण्डिम आनक वेणु आदि वाद्यों में प्रीति करने वाली तुमहो हे प्रिये ! तुम ढक्का वाद्य से भी आनन्दित होती हो तुम शक्ति कैवल्य दायिनी है ॥२९॥

तरुणी--तरूण का आनन्द विग्रह रूप हो हे परमेश्वरि ! हे स्थिरानन्दे ! स्थिरप्रज्ञे ! स्थिरप्रेमरसप्रदे ॥३०॥

देवादि देवताराध्य चरणे ! शरणप्रदे ! धर्माधर्मप्रदे ! धर्माधर्म विवर्जिते ! राधे ! ।३१।

नित्ये नित्यविमानस्थे नित्यानन्दस्वरूपिणि ।
परं ब्रह्मस्वरूपासि परमानन्दवन्दिते ॥३२॥
स्फुरत् कान्तिकान्तदेहे स्फुरन्मकर कुण्डले ।
ब्रह्मज्योतिर्म्मये देवि राधिकेत्वां नमाम्यहम् ॥३३॥
भवानन्देऽभवानन्दे भावाभाव विवर्जिते ।
मन्दमन्दस्मिते मुग्धे राधिके रक्ष मां सदा ॥३४॥
यज्ज्ञानं ज्ञाननिष्ठानां ध्यानं ध्यानवतामपि ।
योगिनाञ्चैव मत्प्राप्यं तस्यै तुभ्यं नमोनमः ॥३५॥
रक्ते रक्तेक्षणे राधे राधिके रमणे रमे ।
रामे मनोरमे रत्नमाले मां रक्ष सर्वदा ॥३६॥
रकारः सर्वमन्त्राणामाधारः परिकीर्त्तितः ।
तदाधारस्वरूपा त्वं तेन राधेति कथ्यते ॥३७॥

नित्य ! नित्य विमानस्थे ! नित्यानन्द स्वरूपिणि ! तुमपरब्रह्म स्वरूप हो । हे परमानन्दवन्दिते । ३२॥ स्फुरत् कान्ति कान्तदेहे स्फुरन्मकर कुण्डले ! ब्रह्म ज्योतिर्म्मये ! हे देवि ! हे राधिके तुम को मैं प्रणाम करता हूँ ।३३।

भवानन्दे ! अभवानन्दे ! भावाभाव विवर्जिते ! मन्द मन्दस्मिते मुग्धे ! हे राधिके ! मुझे सदा रक्षा करो ॥३४॥

ज्ञान निष्ठों का जो ज्ञानहै, वह तुमही हो, ध्यान कारियों का ध्यान स्वरूप हो योगियों के जो प्राप्य वह भी तुम ही हो, तुम्हे वार म्वार प्रणाम ।३५।

हे रक्ते ! रक्तेक्षणे ! राधे ! राधिके ! रमणे ! रमे ! रामे ! मनोरमे ! रत्नमाले ! मुझे सर्वदा रक्षा करो ।३६।

समस्त मन्त्र का आधार रकार है। तुम उस का भी आधार हो, इसलिए तुम्हें राधा कहते हैं ।३७।

रकारो वह्निराख्यातो यथा बह्निः प्रतिष्ठितः ।
देवाः प्रतिष्ठिता यज्ञे ततो वृष्टि स्ततौदनम् ॥३८॥
ततस्तु सर्व भूतानि नानावर्णा कृतोनि च ।
तत् सम्यग्धार्य्यते यस्मात्तेन राधेति कथ्यते ॥३९॥
ममदेहस्थितैः सर्वैर्देवै र्ब्रह्मपुरोगमैः ।
आराधिता यत स्तस्माद्राधिकेति निगद्यते ॥४०॥
लक्ष्मी सहस्रसंसेव्ये लक्षिते लक्षणान्विते ।
वासुदेवार्च्चिते नित्ये विद्ये त्वां प्रणमाम्यहम् ॥४१॥
शब्दातीते शक्ति करे शान्ते सर्वाधिवन्दिते ।
समस्त भुवनानन्दे सर्वेश्वरि नमोऽस्तुते ॥४२॥
षट् पदाघूर्णित श्रीमद् वनमाला विभूषिते ।
षड़ाधारैक वसति-षट्शास्त्र ज्ञान दुर्गमे ॥४३॥

र कार वह्नि का वाचक है, वह्नि के द्वारा ही देवगण प्रतिष्ठित होते हैं। यज्ञ होने के कारण वृष्टि होती है, उससे अन्न होता हैं। अन्न से समस्त भूत नानाआकृति वर्ण भी होते हैं, ये सव के परम आधार होने के कारण ही राधा कही जाती है। ३८-३९।

मेरे देह स्थित ब्रह्मादि से लेकर समस्त देवताओंने जिनकी आराधना की हैं इस लिए राधा कही गई है।४०। सहस्र लक्ष्मीयों के संसेव्य लक्षणान्बिते ! एवं वासुदेवके द्वारा नित्य अर्च्चिते ! हे विद्ये तुमको मैं प्रणाम करता हूँ।४१।

हे शब्दातीते ! शक्तिकरे ! शान्ते ! सर्वाधिवन्दिते ! समस्त भुवनानन्दे ! सर्वेश्वरि ! तुम्हारे प्रति मेरा नमस्कार ।।४२।

षट् पद विलसित श्रीमद् वनमाला विभुषिते। षड़ाधारके एक मात्र आश्रय- षट्-शास्त्र ज्ञान दुर्गमे ! ।४३।

हंस रूपे हेमगर्भे हंसगामिनि हारिणि ।
हूँ हूँकार प्रिये नित्ये राधिके त्वां नमाम्यहम् ॥४४॥
क्षमाशीले क्षमारूपे क्षीणमध्ये क्षमान्विते ।
अक्षमालाधरे देवि सिद्धे विद्ये नमोऽस्तुते ॥४५॥
एवं स्तुता तदा देवी कृष्णेन परमात्मना ।
राधा निरीक्ष्य सप्रेमं वशे कर्त्तुं जगद्गुरुम् ॥४६॥
आश्वास्य मनसा कृष्णं वद्धया भीतमुद्रया ।
वामेन पाणिपद्मेन पद्म युक्तेनशोभिना ॥४७॥
दातुकामा वरं प्रेमृणा किञ्चिन्नोवाच लज्जया ।
एतस्मिन्नेव काले तु तस्या देहात् समुद्गता ॥४८॥
पाशाङ्कुशधरा नित्या वराभय करा परा ।
रक्तवर्णाविशालाक्षी रक्ताम्बराधरावरा ॥४९॥

हंस रूपे ! हेमगर्भे ! हंस गामिनि ! हारिणि ! हूँ हूँकार प्रिये नित्ये ! हे राधिके तुमको मैं नमस्कार करता हूँ।४४।

क्षमाशीले ! क्षमारूपे ! क्षीणमध्ये ! क्षमान्विते ! अक्ष माला धरे ! हे देवि ! सिद्धे ! विद्ये ! तुम्हारे प्रति मेरा नमस्कार।४५।

परमात्मा कृष्णने देवी को इस प्रकार से जव स्तव किया, तो राधाने जगद् गुरुको प्रेम पूर्वक वशीभूत करने के लिएशोचा।४६।

मनसे ही कृष्णको आश्वास प्रदान किया,और स्वाभाविक संकुचित भावसे वाम पाणि पद्म से मनोहर कमल को पकड़ कर कृष्णको बर प्रदान के लिए इच्छुक होकर भी लज्जासे कुछ भी नहीं कही। इसी समयउनके देह से वक्ष्यमाण स्वरूप आविर्भूत हुआ ४७-४८।

पाशाङ्कुश धरा, नित्य, वराभयकरा, परा, रक्त वर्णा, विशालाक्षी, रक्ताम्वरधरा, वरा। रक्त आभरण व माल्यों से

रक्ताभरण मालाढ्या समुत्तुङ्ग कुचद्वया ।
रत्न नूपुर युक्ताभां पद्भ्यां संस्पृश्य वेदिकाम् ॥५०॥
नानारत्नमयीं देवीं ज्वलत् पावकसन्निभाम् ।
जपन्तीं मोहनं मन्त्रं हूँकारं सर्व मोहनम् ॥५१॥
अङ्कुशेन मनस्तस्य कृष्णस्याकृष्य यन्ततः ।
ववन्ध प्रेमपाशेन हसन्ती वामपाणिना ॥५२॥
मा भयंकुरु देवेश प्राप्स्यसि मां वराङ्गनाम् ।
वन्दितां सकलै र्देवैं सर्वशक्तिशिखामणिम् ॥५३॥
वरं दास्यामि ते कृष्ण प्रसन्न वदनोभव ।
प्रकृतिस्त्वं पुमानेवं त्वमहं त्वमियं विभो ॥५४॥
आत्मारामोऽसि भगवन् विमोहश्च कथंत्वयि ।
अहमस्यामहादेव्या द्वितीया मूर्त्तिरुत्तमा ॥५५॥
त्वत् सकाशमिहायाता वरदानार्थमुद्यता ।

शोभित, समुत्तुङ्गकुचद्वया, रत्न नूपुर शोभित चरणों से नाना रत्न मयी अनल के समान कान्ति युक्त प्रकाश शील, सर्वमोहन हूँकार मन्त्र जप से पूत वेदिकाको स्पर्श करके ।५०।५१।।

यत्न पूर्वकहंस हंसकर अङ्कुशकेद्वारा कृष्णके मनको आकर्षण कर वाँये हात से हंस हंस कर कृष्णको प्रेम पाशसे वांधलिया ।५२।

और कही, हे देवेश ! डरो मत, सर्व शक्ति शिरोमणि सकल देव वन्दित मुझ वराङ्गनाको तुम प्राप्त करोगे ।५३॥

हे कृष्ण ! हे विभो ! प्रसन्न वदन हो जाओं,मैं तुम्हेंवर दुंगी । प्रकृति और पुरुष, तुम और मैं तुम और ये ।५४।

हे भगवन् ! तुम आत्माराम हो, तुम्हें कैसे विमोह आया है । मैं उन महादेवी की उत्तमा द्वितीयामूर्त्ति हूँ ॥५५।

किमिच्छसि जगत् स्वामिन् तुभ्यं दास्यामि तद्वद ।५६।

श्रीकृष्ण उवाच—

प्रसन्ना यदि मे देवि ! वरमेकं प्रयच्छ मे ।
इयं भवतु मे वश्या गौराङ्गी विश्वमोहिनी ॥५७॥
तव प्रसादाद् यद्येषा मम वश्या भवेत्ततः
ममैव पूजिता त्वां वै भविता भुवनेश्वरी ॥५८॥

श्रीदेव्युवाच—

कृष्ण ! कृष्ण ! महायोगिन् प्रधान पुरुषेश्वरः ।
भविता तव वश्येयं राधा त्रैलोक्य सुन्दरी ॥५९॥
यदात्वया वर्ण्यमाना त्वत् कृता स्तुति रुत्तमा ।
तदैवेयं महादेवी स्वयं राधा वशङ्गता ॥६०॥
संनिरीक्ष्याभवद्रूपं त्रैलोक्यातिशयं शुभम् ।

वरदानार्थ तुम्हारे समीप मैं आई हूँ, हे जगत् स्वामिन् ! तुम क्या चाहते हो कहो, मैं प्रदान करूँगी ।५६।

श्रीकृष्ण वोले—

हे देवि ! यदि मुझ पर प्रसन्न हुई हो, तो, एकही वर मुझे दो ये विश्व मोहिनी गौराङ्गी मेरे वशमें होजाँय, तुम्हारे प्रसाद से यदि ये मेरी अधीन हो जाती है, ।५७। तो तुम मुझसे पूजिता होकर भुवनेश्वरी हो जाऊगी ।।५८।

श्रीदेवी बोली—

हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! हे महायोगिन् ! प्रधान पुरुषेश्वर हो । यह त्रैलोक्य सुन्दरी राधा तुम्हारी होगी ।५९।

जव तुमने राधाकी उत्तमा स्तुति की तव ही महादेवी राधा स्वयं वशीभूता होगयी है ।६०।।

श्रुत्वा च वंशीनिनदं कास्त्र्यङ्ग स्यान्न मोहिता ।६१।

सदाशिव उवाच—

य एनं पठति स्तोत्रं राधामोहन–मोहनम् ।
तस्य तुष्टा महादेवी प्रदास्यति मनोगतम् ॥६२॥
परंतस्यजगत् सर्वंवशेतिष्ठति नित्यशः ।
तस्यदर्शन मात्रेणवादिनो निष्प्रभा गताः ॥६३॥
धात्वादेवीं जगद्योनिमादिभूतांसनातनीम् ।
राधांत्रैलोक्य विजयां तथा सर्वाघनाशिनीम् ॥६४॥
जपेदष्टाक्षरं मन्त्रं पठेत् स्तोत्रं समाहितः ।
प्रणमेत् परया भक्त्या करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥६५॥
कृष्ण प्रोक्तमिदं स्तोत्रं यः पठेद् यतिसाधकः ।
धर्मार्थ काम मोक्षा वै वशे निष्ठन्ति सर्वदा ॥६६॥

त्रैलोक्यातिशय शुभ आपका रूप को दर्शन कर तथा वंशी निनद को सुनकर हे भैया ! कौन सी ऐसी स्त्री है, जो मोहित नहीं होगी ॥६१॥

श्रीसदाशिव ने कहा--

जो जन राधामोहन–मोहन यह स्तोत्र का पाठ करेगा, उसके प्रति संतुष्ट होकर महादेवी मनोरथ को पूर्ण कर देगी ॥६२।

इसरी वात भी वह है कि उसके वश में नित्य ही जन मानस वशीभूत होंगी । उस के दर्शनमात्र से ही वादी निष्प्रभहो जावेगा ।६३

जगद्योनि, आदिभूता सनातनी, सर्वाघनाशिनी त्रैलोक्य विजया राधा का ध्यान कर ।६४।

अष्टाक्षर मन्त्र का जप तथा एकाग्र मनसे स्तोत्र का पाठकरे, और भक्ति से प्रणाम करे तो सर्वसिद्धि करतलगत हो जावेगी ।६५

कृष्ण प्रोक्त यह स्तोत्र यति--साधक यदि पढ़े तो उसके वश में

शींकार वह्नि संयुक्तमनन्तं तदनन्तरम् ।
नादविन्दु कलायुक्तं राधिकायै ततः परम् ॥६७॥
हृदयान्तं महामन्त्रमष्टाक्षर परंविदुः ।
अस्य स्मरण मात्रेण किं न सिद्धचति साधनम् ॥६८॥
इमं मन्त्रमिदं स्तोत्रं यस्य वाचि प्रवर्त्तते ।
त्रैलोक्यसुन्दरी देवी चित्तेतस्यनिरन्तरम् ॥
वाक्सिद्धं लभतेयोगी योगिनामपि दुर्लभम् ६९

इति श्रीगोविन्द वृन्दावने श्रीराधिका वर्णनास्तुतिः समाप्ता

—*—

सर्वदा धर्मार्थ-काम-मोक्षहोंगे ॥६६॥

वह्नि संयुक्त शींकार इसकेवाद अनन्त नाद और विन्दु युक्त होगा, अनन्तर "राधिकायै" पद होगा ॥६७॥

हृदयान्त होकर यह मन्त्र अष्टाक्षर होगा । यह मन्त्र सर्वश्रेष्ठ है, इस मन्त्र का स्मरण से कोई भी साधन असिद्ध नहीं रहेगा ॥६८॥

यह मन्त्र और स्तोत्र जिसके कण्ठमें स्थित होगा, उसके चित्त में त्रैलोक्य सुन्दरीदेवी निरन्तर रहेगी, योगियों को दुर्लभ वाक्सिद्धि का भी लाभ होगा ॥६९॥

इति श्रीश्रीगोविन्दवृन्दावनेश्रीराधिकावर्णना-स्तुतिः समाप्ता ।

वेदाग्नि गगनेनेत्रे माधवे विधुवासरे
श्रीनृसिंह चतुर्दश्यां ग्रन्थोऽयं पूर्णतांगतः ।
भृगर्भान्वयजातेन वृन्दावननिवासिना
शास्त्रिणाहरिदासेन सानुवादः प्रकाशितः ॥

—*—